नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 36, नई दिल्ली, गुरुवार 14 मई 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"सच्चाई और न्याय का मार्ग कठिन जरूर होता है, लेकिन अंत में वही मार्ग सम्मान, विश्वास और सच्ची जीत तक पहुँचाता है।"

03 जहां शिव के साथ विराजती हैं शक्ति
06 गणित में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
08 रवि मीणा ने राउरकेला के नए डीएफओ के रूप में संभाला कार्यभार

नीट संकट और परीक्षा-व्यवस्था की विश्वसनीयता

डॉ. सत्यवान सौरभ

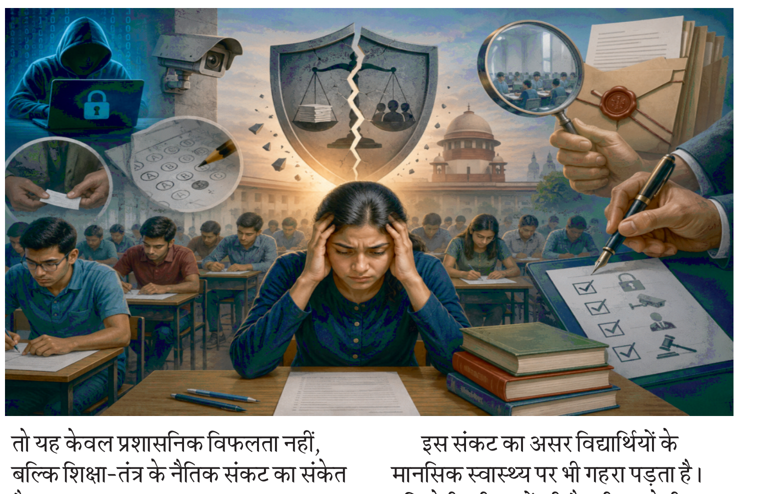

नीट-2026 को लेकर उठी अनिश्चितता और रद्दीकरण संबंधी आशंकाओं ने लाखों विद्यार्थियों और अभिभावकों की चिंता बढ़ा दी है। प्रतियोगी परीक्षाएँ केवल चयन की प्रक्रिया नहीं होतीं, बल्कि युवाओं के भविष्य, मेहनत और विश्वास का आधार होती हैं। जब किसी राष्ट्रीय परीक्षा की निष्पक्षता पर सवाल उठते हैं, तो उसका असर केवल परिणामों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि छात्रों के मानसिक संतुलन और शिक्षा-व्यवस्था पर भरोसे को भी प्रभावित करता है। ऐसी स्थिति में प्रशासन की जिम्मेदारी केवल परीक्षा आयोजित करने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि पारदर्शिता, समयबद्ध सूचना और निष्पक्षता सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक हो जाता है।

भारत की प्रतियोगी परीक्षा-व्यवस्था सामाजिक न्याय और अवसर की समानता का महत्वपूर्ण माध्यम है। नीट जैसी परीक्षाएँ लाखों विद्यार्थियों के सपनों से जुड़ी होती हैं, खासकर उन छात्रों के लिए जो सीमित संसाधनों के बावजूद अपनी मेहनत के बल पर आगे बढ़ना चाहते हैं। लेकिन जब परीक्षा-प्रणाली बार-बार विवादों और अनियमितताओं के घेरे में आती है, तब सबसे अधिक नुकसान ईमानदारी से तैयारी करने वाले विद्यार्थियों का होता है। जिनके पास केवल परिश्रम है, उनके लिए परीक्षा की विश्वसनीयता ही सबसे बड़ी पूंजी होती है।

परीक्षा-प्रणाली का संकट अचानक पैदा नहीं होता। यह उन कमजोरियों का परिणाम होता है जिन्हें समय रहते सुधारा नहीं जाता। प्रश्नपत्र निर्माण, गोपनीय सामग्री का संरक्षण, परीक्षा केंद्रों की निगरानी, तकनीकी सत्यापन और उत्तर-पत्रों की सुरक्षा—इन सभी स्तरों पर यदि एक भी कड़ी कमजोर हो जाए, तो पूरी व्यवस्था संदेह के घेरे में आ जाती है। आज परीक्षा केवल कागज और कलम तक सीमित नहीं है, बल्कि तकनीक, डेटा और सुरक्षा से जुड़ा एक जटिल तंत्र बन चुकी है। ऐसे में छोटी-सी लापरवाही भी लाखों छात्रों के भविष्य को प्रभावित कर सकती है।

विश्वास केवल पारदर्शिता से नहीं, बल्कि निरंतरता से बनता है। यदि विद्यार्थियों को यह भरोसा न हो कि उनकी मेहनत का निष्पक्ष मूल्यांकन होगा, तो तैयारी का पूरा माहौल अनिश्चितता में बदल जाता है। आज कई छात्र परीक्षा केंद्र तक पहुंचने से पहले ही इस चिंता से घिरे रहते हैं कि कहीं प्रश्नपत्र लीक न हो जाए, कहीं कोई अनुचित लाभ न ले जाए, या कहीं परीक्षा बाद में विवादों में न फंस जाए। जब ऐसे सवाल सामान्य हो जाएँ, तो यह केवल प्रशासनिक विफलता नहीं, बल्कि शिक्षा-तंत्र के नैतिक संकट का संकेत है।

नीट जैसी परीक्षाओं का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि यह केवल प्रवेश परीक्षा नहीं, बल्कि लाखों परिवारों की सामाजिक-आर्थिक उम्मीदों का केंद्र है। ग्रामीण क्षेत्रों और निम्न-मध्यम वर्ग के छात्र वर्षों तक कठिन परिस्थितियों में तैयारी करते हैं। ऐसे में यदि परीक्षा की निष्पक्षता संदिग्ध हो जाए, तो उनका आत्मविश्वास टूट जाता है। इसलिए परीक्षा-प्रणाली की पारदर्शिता केवल प्रशासनिक सुधार नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय का भी प्रश्न है।

इस संकट का असर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा पड़ता है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पहले ही अत्यधिक तनावपूर्ण होती है। छात्र लंबे समय तक अनुशासित दिनचर्या, पारिवारिक अपेक्षाओं और भविष्य की चिंता के बीच संघर्ष करते हैं। जब परीक्षा का भविष्य ही अनिश्चित हो जाए, तो मानसिक दबाव कई गुना बढ़ जाता है। कुछ विद्यार्थी निराशा में चले जाते हैं और कुछ अपनी मेहनत पर ही संदेह करने लगते हैं। इसलिए परीक्षा-प्रशासन को यह समझना होगा कि वह केवल परीक्षा नहीं करा रहा, बल्कि युवाओं के भविष्य और भरोसे की जिम्मेदारी भी निभा रहा है।

डिजिटल युग ने परीक्षा-प्रणाली को आधुनिक बनाया है, लेकिन नई चुनौतियाँ भी पैदा की हैं। ऑनलाइन पंजीकरण, सीसीटीवी निगरानी और केंद्रीकृत डेटा प्रबंधन जैसी सुविधाओं ने व्यवस्था को मजबूत किया है, पर साथ ही डेटा लीक, साइबर घुसपैठ और तकनीकी छेड़छाड़ के खतरे भी बढ़े हैं। इसलिए केवल तकनीक अपनाना पर्याप्त नहीं है; उसकी सुरक्षा और जवाबदेही भी उतनी ही मजबूत होनी चाहिए।

परीक्षा-व्यवस्था में सुधार के लिए सबसे पहले जवाबदेही तय करनी होगी। जब कोई परीक्षा विवाद में आती है, तो केवल घटना पर चर्चा पर्याप्त नहीं होती। यह भी देखना जरूरी है कि लापरवाही कहाँ हुई और उसके लिए जिम्मेदार कौन है। परीक्षा-आयोजक संस्थाओं, संबंधित अधिकारियों और सुरक्षा एजेंसियों की भूमिका की निष्पक्ष समीक्षा होनी चाहिए। यदि दोषियों पर त्वरित कार्रवाई नहीं होगी, तो हर बार वही संकट दोहराया जाएगा।

इसके साथ ही एक मजबूत और समयबद्ध ऑडिट प्रणाली की आवश्यकता है। प्रश्नपत्र निर्माण से लेकर परीक्षा-समापन तक हर चरण का सुरक्षित रिकॉर्ड रखा जाए, ताकि किसी भी संदिग्ध स्थिति में तुरंत जांच

नीट पेपर लीक: जिम्मेदार कौन?

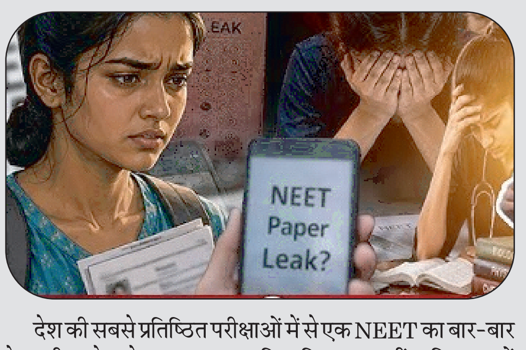

देश की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षाओं में से एक NEET का बार-बार पेपर लीक होना केवल एक प्रशासनिक विफलता नहीं, बल्कि लाखों युवाओं के विश्वास पर सीधा प्रहार है। यह प्रश्न आज हर नागरिक के मन में है कि जब हमारे पास विशाल प्रशासनिक ढांचा, खुफिया तंत्र, सुरक्षा एजेंसियाँ और तकनीकी संसाधन मौजूद हैं, तब भी परीक्षा पत्र लीक होने की घटनाएँ क्यों नहीं रुक रहीं? आखिर इस पूरे तंत्र में ऐसी कौन-सी दरार है, जहाँ से हर वर्ष लाखों विद्यार्थियों का भविष्य रिस जाता है? इस पेपर लीक ने केवल एक परीक्षा को प्रभावित नहीं किया, बल्कि उन लाखों मेहनती विद्यार्थियों की आशाओं को तोड़ा है, जिन्होंने दिन-रात एक करके अपनी तैयारी की थी। कितने पिता अपनी संतानों की सफलता के सपने आँखों में लिए बैठे थे, कितनी माताएँ घर-गृहस्थी की जिम्मेदारियाँ पीछे छोड़कर अपने बच्चों के साथ तैयारी में जुटी थीं, कितने परिवारों ने अपनी सामर्थ्य से अधिक खर्च कर कोचिंग, किताबें और संसाधन जुटाए थे। आज उनके सामने केवल एक प्रश्न है उनके खोए हुए समय, संसाधनों, मानसिक शांति और टूटे हुए उत्साह की भरपाई कौन करेगा? कुछ लोग कह सकते हैं कि परीक्षा दोबारा हो जाएगी। लेकिन क्या टूटा हुआ मनोबल भी इतनी आसानी से लौट आता है? क्या दोबारा वही ऊर्जा, वही आत्मविश्वास, वही मानसिक संतुलन फिर से जुटाया जा सकता है? एक परीक्षा की तैयारी केवल किताबें पढ़ लेने का नाम नहीं होती; इसके पीछे महीनों की मानसिक तपस्या, सामाजिक त्याग और आर्थिक संसाधनों की खपत होती है। बार-बार परीक्षा स्थगित होना या पेपर लीक होना संसाधनों की बर्बादी ही नहीं, युवाओं के धैर्य और भरोसे की हत्या है। सबसे गंभीर बात यह है कि हर बार घटना के बाद जांच, गिरफ्तारी और आश्वासन की औपचारिकताएँ पूरी हो जाती हैं, लेकिन मूल प्रश्न वहीं रह जाता है कि जिम्मेदार कौन? जब तक जवाबदेही तय नहीं होगी, जब तक व्यवस्था में पारदर्शिता और कठोर दंड का भय स्थापित नहीं होगा, तब तक हर अगला पेपर किसी अगली पीढ़ी के सपनों को कुचलने के लिए तैयार खड़ा होगा। शिक्षा व्यवस्था केवल परीक्षा आयोजित करने का माध्यम नहीं, बल्कि युवाओं के विश्वास का स्तंभ है। यदि यह स्तंभ ही कमजोर पड़ जाए, तो राष्ट्र का भविष्य भी डगमगाने लगता है। अब समय आ गया है कि जवाबदेही तय हो, दोषियों को सजा मिले और ऐसी व्यवस्था बने जहाँ मेहनत का मूल्य हो, न कि पैसों और पहुंच का। क्योंकि जब सपने बार-बार टूटते हैं, तो केवल एक छात्र नहीं हारता, पूरा देश हारता है।

-डॉ. गरिमा भाटी

क्या नीट परीक्षा दोबारा कराने से समस्या हल हो जायेगी?

सौरभ वार्ष्णेय

देश की सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट हर वर्ष लाखों छात्रों के भविष्य का निर्धारण करती है। ऐसे में यदि परीक्षा की पारदर्शिता पर सवाल उठते हैं, पेपर लीक या धांधली की आशंका सामने आती है, तो छात्रों और अभिभावकों में आक्रोश स्वाभाविक है। इसी संदर्भ में यह सवाल उठ रहा है कि क्या नीट परीक्षा दोबारा कराने से समस्या का समाधान हो जाएगा? या इस पर केंद्र सरकार कड़ी कार्रवाई करते हुए ऐसे सिस्टम के नकारा लोगों पर हंटर चलायेगी जिससे इस लीक माफिया पर ऐसा करना भूल जायें।

पहली दृष्टि में पुनर्परीक्षा एक न्यायसंगत कदम प्रतीत होता है। जिन छात्रों ने ईमानदारी से मेहनत की और परीक्षा प्रक्रिया में गड़बड़ी के कारण स्वयं को ठगा हुआ महसूस किया, उनके लिए दोबारा परीक्षा एक अवसर बन सकती है। इससे यह संदेश भी जाएगा कि सरकार और परीक्षा एजेंसियां निष्पक्षता के प्रति गंभीर हैं तथा किसी भी प्रकार की अनियमितता को स्वीकार नहीं किया जाएगा।

लेकिन समस्या केवल पुनर्परीक्षा तक सीमित नहीं है। यदि व्यवस्था की खामियां जस की तस बनी रहती हैं, तो दोबारा परीक्षा भी नए विवादों को जन्म दे सकती है। लाखों छात्रों पर मानसिक दबाव, अतिरिक्त आर्थिक बोझ और तैयारी की अनिश्चितता का प्रभाव पड़ता है। कई विद्यार्थी पहले ही अत्यधिक तनाव में रहते हैं; पुनर्परीक्षा उनकी मानसिक स्थिति को और कठिन बना सकती है।

असल प्रश्न यह है कि बार-बार परीक्षा कराने की नौबत क्यों आती है? जब तक परीक्षा प्रणाली में तकनीकी सुरक्षा, प्रश्नपत्र की गोपनीयता, परीक्षा केंद्रों की निगरानी और जवाबदेही मजबूत नहीं होगी, तब तक केवल पुनर्परीक्षा स्थायी समाधान नहीं बन सकती। आवश्यकता इस बात की है कि परीक्षा संचालन में आधुनिक तकनीक, सख्त निगरानी और पारदर्शी जांच व्यवस्था लागू की जाए।

साथ ही, दोषियों पर त्वरित और कठोर कार्रवाई भी उतनी ही आवश्यक है। यदि पेपर लीक या भ्रष्टाचार में शामिल लोगों को राजनीतिक या प्रशासनिक संरक्षण मिलता रहेगा, तो छात्रों का विश्वास लगातार कमजोर होगा। शिक्षा व्यवस्था में विश्वास बनाए रखना किसी भी लोकतंत्र की प्राथमिक जिम्मेदारी है।

यदि व्यापक स्तर पर अनियमितता सिद्ध होती है तो पुनर्परीक्षा आवश्यक कदम हो सकता है, लेकिन इसे अंतिम समाधान नहीं माना जा सकता। वास्तविक समाधान परीक्षा प्रणाली में सुधार, जवाबदेही तय करने और छात्रों के विश्वास को पुनर्स्थापित करने में निहित है। केवल परीक्षा दोबारा कराने से नहीं, बल्कि व्यवस्था को ईमानदार और मजबूत बनाने से ही भविष्य सुरक्षित होगा।

नीट पेपर लीक करने वालों पर कार्रवाई कब?

लाखों विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों की मेहनत पर पानी फेरने वाले पेपर लीक गिरोहों के खिलाफ आखिर ठोस कार्रवाई कब होगी, यह सवाल आज पूरे देश में गूंज रहा है। हर वर्ष परीक्षा के बाद पेपर लीक, धांधली और नकल माफिया की खबरें सामने आती हैं, लेकिन कार्रवाई की गति इतनी धीमी रहती है कि लोगों का भरोसा व्यवस्था पर कमजोर पडने लगता है।सरकार और जांच एजेंसियां दावा करती हैं कि दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। कई राज्यों में गिरफ्तारियां भी हुई हैं, कुछ कोचिंग सेंटरों और दलालों पर छापेमारी भी हुई। लेकिन असली चिंता यह है कि क्या केवल छोटे एजेंटों को पकड़ लेने से समस्या खत्म हो जाएगी? जब तक इस पूरे नेटवर्क के बड़े सरगनाओं, भ्रष्ट अधिकारियों और तकनीकी मिलीभगत करने वालों तक जांच नहीं पहुंचेगी, तब तक ऐसे अपराध रुकना मुश्किल है।पेपर लीक केवल एक परीक्षा में गड़बड़ी नहीं, बल्कि देश के युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। एक मेहनती छात्र वर्षों तक तैयारी करता है, जबकि कुछ लोग पैसे और पहुंच के दम पर व्यवस्था को कमजोर कर देते हैं। इससे प्रतिभाशाली छात्रों का मनोबल टूटता है और शिक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े होते हैं।जरूरत केवल कार्रवाई की घोषणा करने की नहीं, बल्कि त्वरित और उदाहरण प्रस्तुत करने वाली सजा देने की है। यदि पेपर लीक मामलों की सुनवाई के लिए विशेष अदालतें बनें, डिजिटल सुरक्षा मजबूत हो, परीक्षा प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी बने और दोषियों की संपत्ति जब्त करने जैसे कठोर कदम उठाए जाएं, तभी वास्तविक डर पैदा होगा। सरकार को यह समझना होगा कि युवाओं का विश्वास किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी है। यदि प्रतियोगी परीक्षाओं की निष्पक्षता पर लगातार प्रश्न उठते रहे, तो यह केवल शिक्षा व्यवस्था ही नहीं, बल्कि देश की प्रतिभा और भविष्य दोनों के लिए गंभीर खतरा बन जाएगा।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

रिज़र्व बैंक इनोवेशन हब (RBIH): म्यूल अकाउंट्स द्वारा हो रहे साइबर अपराधों को रोकने का एक बेहतरीन प्रयास

पिंकी कुंडू

12 मई 2026 को रिज़र्व बैंक इनोवेशन हब (RBIH) ने भारतीय साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर (I4C) के साथ एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए। इसका उद्देश्य एआई संचालित प्रणालियों के माध्यम से साइबर धोखाधड़ी से लड़ना है, विशेष रूप से म्यूल अकाउंट्स को निशाना बनाना। इस साझेदारी के तहत I4C का Suspect Registry RBIH के MuleHunter.AI प्लेटफ़ॉर्म से जोड़ा जाएगा, जिसे पहले से ही 26+ बैंकों में लागू किया जा चुका है। इससे भारत के डिजिटल भुगतान तंत्र में धोखाधड़ी का पता लगाने की क्षमता और मज़बूत होगी।

गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार "साइबर सुरक्षित भारत" बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने ज़ोर दिया कि म्यूल अकाउंट्स साइबर अपराधों को रोकने में सबसे बड़ी चुनौती बने हुए हैं। इस MoU के ज़रिए बैंकिंग और डिजिटल भुगतान तंत्र में साइबर सक्षम वित्तीय धोखाधड़ी से निपटने और म्यूल अकाउंट्स को समाप्त करने के लिए सहयोग को मज़बूत किया जाएगा।

मुख्य बिंदु

- MoU हस्ताक्षरितः I4C (गृह मंत्रालय के अंतर्गत) + RBI Innovation Hub
- उद्देश्यः म्यूल अकाउंट्स का पता लगाना और समाप्त करना — ऐसे बैंक खाते जिनका उपयोग अपराधी धोखाधड़ी की रकम छिपाने या ट्रांसफ़र करने में करते हैं।
- तकनीकः I4C Suspect Registry का RBIH के एआई संचालित टूल्स (MuleHunter.AI सहित) से एकीकरण।
- प्रभावः संदिग्ध खातों की तेज़ पहचान, धोखाधड़ी वाले लेन देन को समय रहते रोकना।
- वक्तव्यः गृह मंत्री श्रीअमित शाह ने इसे "साइबर सुरक्षित भारत" बनाने की दिशा में अहम कदम बताया।

RBI Innovation Hub (RBIH)

रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक इकाई।

- मुख्यालयः KEONICS, 27th Main Rd, HSR Layout, बेंगलुरु, कर्नाटक।
- मिशनः भारत की वित्तीय चुनौतियों को तकनीक, नीति अनुसंधान और सहयोग से हल करना।
- **मुख्य प्लेटफ़ॉर्मः**
  - o Unified Lending Interface (ULI): सहज क्रेडिट डिलीवरी के लिए यूनिवर्सल API गेटवे।
  - o Digital Payments Intelligence Platform: डिजिटल लेन देन के लिए रियल टाइम फ्रॉड स्कोरिंग।
  - o MuleHunter.AI: एआई/एमएल प्रणाली जो बैंकों को म्यूल अकाउंट्स पहचानने और ब्लॉक करने में सक्षम बनाती है।
  - o Fintech Repository: वित्तीय नवाचार का ज्ञान भंडार।

म्यूल अकाउंट्स क्यों ख़तरनाक हैं

- नकली पहचान या अनजान व्यक्तियों के नाम पर खोले गए खाते जिनका उपयोग अवैध धन ट्रांसफ़र के लिए होता है।
- इन्हें ट्रेस करना कठिन, अक्सर बड़े धोखाधड़ी नेटवर्क का हिस्सा।

MoU का लाभः वित्तीय इंटेलिजेंस (RBIH) और साइबर अपराध जांच डेटा (I4C) का संयोजन, जिससे धोखाधड़ी रोकथाम और मज़बूत होगी।

अपेक्षित प्रभाव

- बैंकों के लिएः बेहतर फ्रॉड रिस्क इंटेलिजेंस, रियल टाइम मॉनिटरिंग, एआई संचालित डिटेक्शन।
- नागरिकों के लिएः फ़िशिंग, UPI स्कैम और डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी से अधिक सुरक्षा।
- नियामकों के लिएः RBI, गृह मंत्रालय और वित्तीय संस्थानों के बीच बेहतर समन्वय।
- **चुनौतियाँः**
  - o डिजिटल भुगतान में सुरक्षा बनाम सुविधा का संतुलन।
  - o रजिस्ट्रियों के एकीकरण में डेटा गोपनीयता सुनिश्चित करना।
  - o बदलते धोखाधड़ी तरीकों से निपटने के लिए एआई मॉडल का निरंतर अपडेट।

नीट?? मेरे प्रिय भविष्य के चिकित्सकों, संघर्ष की भट्ठी में तपकर ही कुंदन निख़रता है

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़

आज जब NEET की परीक्षा को लेकर अनिश्चितता के बादल मंडरा रहे हैं और 'दोबारा परीक्षा' की सुग़बुगाहट ने आप सबके मन में हलचल पैदा कर दी है, आप एक अनिश्चितता लिए आसमान को घूर रहे होंगे, सच भी है, भविष्य की अनिश्चितता ऐसा करने पर मजबूर कर देती है, तब मैं एक लेखक और आपके मार्गदर्शक के रूप में आपसे मुख़ातिब हूँ। मैं जानता हूँ कि दोबारा उसी रणभूमि में उतरने का विचार मानसिक रूप से थका देने वाला होता है, लेकिन याद रखिए, इतिहास वही रचते हैं जिनके इरादे चट्टानी होते हैं।

यह समय हताश होकर बैठने का नहीं, बल्कि अपनी कमियों को ताकत में बदलने का है। अगर नियति आपको एक और मौका दे रही है, तो इसे 'सज़ा' नहीं, बल्कि 'श्रेष्ठता सिद्ध करने का अवसर' मानिए। आपने महीनों तक रातों की नींद और सुख-चैन का त्याग किया है, वह तपस्या कभी व्यर्थ नहीं जाती। ज्ञान वह पूंजी है जो बांटने से बढ़ती है और दोहराने से अमर हो जाती है।

साहस और रणनीति का संगम बनो तुम,,,सपनों को साकार करो तुम,,आसमान को छु लो तुम,,आपके भाग्य ने दुबारा आवाज़ दी है तुमको,,, आगे बढ़ो आसमान को छू लो,,तुम्हरे माता पिता का सपना साकार करो तुम,,

एक योद्धा वही है जो युद्ध टलने या दोबारा होने पर अपने शस्त्रों को फेंक नहीं देता, बल्कि उनकी धार को और तेज़ करता है। यदि पिछली बार भौतिकी (Physics) के किसी न्यूमेरिकल ने आपको छकाया था या जीव विज्ञान (Biology) के किसी डायग्राम में आप उलझे थे, तो समझ लीजिए कि यह समय उन बाधाओं को जड़ से मिटाने के लिए मिला है।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत है, नकारात्मक चर्चाओं और सोशल मीडिया की अफ़वाहों से दूर रहें। आपका लक्ष्य किसी विवाद का हिस्सा बनना नहीं, बल्कि गले में 'स्टेथोस्कोप' पहनकर मानवता की सेवा करना है। उस सफ़ेद कोट के सपने को अपनी आँखों में फ़िर से जीवंत कीजिए। वह कोट केवल एक कपड़ा नहीं, बल्कि आपकी मेहनत, आपके माता-पिता के आशीर्वाद और समाज की उम्मीदों का प्रतीक है।

मेरी पंक्तियाँ आपके लिए,

तैयार हो जाओ फिर से उस आग से गुज़रने को,
हौसलों की उड़ान से आसमां को छू लेने को।
मुश्किलें आती हैं सिर्फ़ क़ाबिल इंसान की राहों में,
तुम बने हो अपनी मेहनत से इतिहास लिख देने को।

उठ जाइए, अपनी किताबों की धूल झाड़िए, एक नया टाइम-टेबल बनाइए और पूरी शिद्दत के साथ इस नए सफ़र पर निकल पड़िए। याद रखिए, जीत उसी की होती है जो आख़िरी सांस तक हार नहीं मानता।

पूरे विश्वास के साथ फ़िर से जुट जाइए। विजय आपका वरण करने के लिए प्रतीक्षारत है।

शुभकामनाओं सहित,

PCOS और UTI का है गहरा कनेक्शन, जानें Health Risk के 5 बड़े कारण

PCOS और UTI दोनों ही महिलाओं के हेल्थ से जुड़ी अहम समस्याएं हैं। पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (PCOS) और यूरिनरी ट्रैक्ट इंफेक्शन (UTI) ये दोनों समस्याएं एकदम अलग-अलग हैं। दरअसल, पीसीओएस हार्मोनल असंतुलन के कारण होने वाली समस्या है, जबकि UTI एक बैक्टीरियल इंफेक्शन से होने वाली दिक्कत है। लेकिन PCOS से पीड़ित महिलाएं अक्सर UTI की समस्या से परेशान रहते हैं। जिसके चक्कर में कई बार कंफ्यूज नजर आती है कि पीसीओएस और UTI में क्या कनेक्शन है? आइए आपको इसमें अंतर बताते हैं।

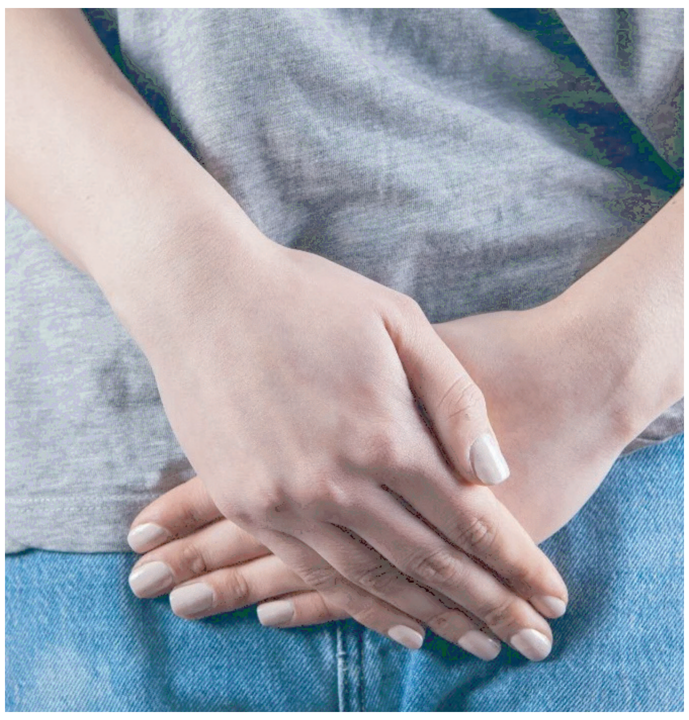

PCOS और UTI के बीच क्या संबंध है?

PCOS की समस्या में हार्मोन असंतुलित होने और ब्लड शुगर बढ़ने की वजह से शरीर में बैक्टीरियल संक्रमण का खतरा अधिक हो जाता है, जिसके कारण महिलाओं को बार-बार यूरिन इंफेक्शन (UTI) की परेशानी हो सकती है। साल 2023 में Journal of the Brazilian Medical Association में प्रकाशित एक रिसार्च में PCOS और UTI के बीच मजबूत संबंध सामने आया। स्टडी में यह भी पाया गया कि PCOS, हाइपरएंड्रोजेनिज्म, मोटापा, ग्लूकोज असंतुलन और खराब लिपिड प्रोफाइल से जूझ रहे मरीजों में UTI की गंभीरता के साथ मेंटल हेल्थ संबंधी समस्याएं भी अधिक देखने को मिलीं।

इंसुलिन रेजिस्टेंस और हाई ब्लड शुगर

पीसीओएस से पीड़ित महिलाएं में इंसुलिन रेजिस्टेंस पाया जाता है। इसका सीधा मतलब यही है कि शरीर इंसुलिन का सही तरह से इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं, जिससे ब्लड शुगर बढ़ने लगता है। जब यूरिन में शुगर की मात्रा बढ़ती है, तो बैक्टीरिया तेजी से पनपने लगते हैं। इसी कारण से पीसीओएस वाली महिलाओं में UTI का खतरा अधिक देखने को मिलता है। हेल्थ एक्सपर्ट बताते हैं कि महिलाओं का वजन ज्यादा होता है और जिनमें असंतुलित इंसुलिन रेजिस्टेंस होता है, जिनमें बार-बार यूटीआई देखने को मिलता है।

हार्मोनल असंतुलन

PCOS में एस्ट्रोजन और प्रोजेस्टेरोन जैसे हार्मोन का संतुलन बिगड़ जाता है। जिसका असर वजाइनल फ्लोरा पर भी देखने को मिलता है। महिलाओं के शरीर में नेचुरल बैक्टीरिया बैलेंस खराब होता है तो इंफेक्शन होने की संभावना अधिक हो जाती है।

वजन बढ़ना और खराब लाइफस्टाइल

पीसीओएस में ज्यादातर मोटापा बढ़ने की शिकायत बेहद आम होती है। अधिक वजन और शारीरिक एक्टिविटी की कमी शरीर में इंफ्लेमेशन बढ़ा देते हैं, जिससे कमजोर होने लगती है। कमजोर इम्यून सिस्टम इंफेक्शन का खतरा अधिक रहता है, जिससे बार-बार UTI होने के चांसेस बढ़ जाते हैं।

पानी कम पीना

ज्यादातर महिलाएं कम पानी पीती हैं, बिजी लाइफस्टाइल के कारण कई बार पानी पीने का समय नहीं होता है। जिससे शरीर टॉक्सिंस और बैक्टीरिया को शरीर से बाहर नहीं कर पाता है। दरअसल, पीसीओएस में डिहाइड्रेशन की समस्या बढ़ जाए, तो यूटीआई का खतरा अधिक बढ़ जाता है।

तनाव और नींद न आना

असल में PCOS केवल हार्मोनल बीमारी नहीं है, बल्कि यह एक प्रकार से मेंटल हेल्थ को भी प्रभावित करती है। ज्यादा तनाव लेने से और नींद की कमी के कारण कोर्टिसोल हार्मोन बढ़ जाते हैं, जिससे इम्यूनिटी भी कमजोर हो जाती है। कमजोर इम्यून सिस्टम शरीर को इंफेक्शन के प्रति अधिक सेंसिटिव कर देता है।

Health के लिए Game Changer हैं ये 4 बीज, महिलाएं इन्हें अपनी Diet में जरूर करें शामिल

अगर आप भी सेहतमंद रहना चाहती हैं तो आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। क्योंकि सेहतमंद रहना बेहद आसान है। अधिकतर बीमारियों के पीछे हमारा गलत खानपान और अनहेल्दी लाइफस्टाइल होती है। लेकिन हेल्दी डाइट इम्यूनिटी को मजबूत करके आपको बीमारियों से दूर रख सकती है। डाइजेशन में सुधार और हार्मोन्स को बैलेंस करती है। वहीं अनहेल्दी ईटिंग हमारी सेहत को बिगाड़ती है।

जब भी हेल्दी डाइट की बात होती है, तो सब्जियों और फलों के साथ सीड्स और नट्स का सेवन भी जरूरी होता है। खासकर महिलाओं के शरीर में ताकत बनाए रखने और हार्मोन्स को बैलेंस करने में कई सीड्स मदद कर सकते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको 4 ऐसे सीड्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनका सेवन महिलाओं को करना चाहिए।

हेल्दी रहने के लिए रोजाना खाएं ये 4 सीड्स

कद्दू के बीज, चिया सीड्स, फ्लैक्स सीड्स और तिल के बीज महिलाओं की सेहत के लिए अच्छे होते हैं। इन बीजों से शरीर को ताकत मिलती है और हार्मोन भी बैलेंसे होते हैं। इन बीजों के सेवन से गट हेल्थ अच्छी होती है।

चिया सीड्स में प्रोटीन, फाइबर और ओमेगा 3 फैटी एसिड पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह हार्मोन्स को बैलेंस रखने में मदद करता है। इसके सेवन से वेट भी कम होता है और डाइजेशन में भी सुधार होता है। यह स्किन हेल्थ के लिए भी फायदेमंद होता है।

कद्दू के बीज आयरन, जिंक और मैग्नीशियम से भरपूर होते हैं। यह बीज महिलाओं में खून की कमी को दूर करते हैं और इम्यूनिटी मजबूत करते है। कद्दू के बीज को डाइट में शामिल करने से पीरियड्स और पीएमएस के दिनों में होने वाली दिक्कतें भी दूर होती हैं।

अलसी के बीजों में ओमेगा-3 फैटी एसिड और लिग्नान होता है। जिन भी महिलाओं को हार्मोनल इंबैलेंस और पीसीओएस की समस्या है, उनको इसका सेवन जरूर करना चाहिए। यह बीज दिल की सेहत के लिए भी बेहतर माने जाते हैं और कोलेस्ट्रॉल को भी कंट्रोल करते हैं।

तिल के बीज में आयरन और कैल्शियम भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इनका सेवन करने से हड्डियां मजबूत होती हैं और कैल्शियम की कमी भी दूर होती है। तिल के बीज बालों और त्वचा के लिए भी लाभकारी होते हैं।

जानिए क्या कहते हैं एक्सपर्ट

हेल्थ एक्सपर्ट की मानें, तो इन बीजों को खाने के सही तरीके और मात्रा की जानकारी होनी जरूरी है। कुछ हेल्थ कंडीशन में इसकी ज्यादा मात्रा आपको नुकसान पहुंचा सकती है। वहीं आपके शरीर की प्रकृति और उम्र के हिसाब से भी इसकी मात्रा और खाने का तरीका तय होना चाहिए।

बढ़ता पारा, पेट का बिगड़ा हाजमा! गर्मी में पेट की समस्या से बचने के लिए अपनाएं ये उपाय

क्या आपके पेट में बार-बार दर्द या ऐंठन की समस्या हो रही है? तो इस भूलकर भी इग्नोर न करें। गर्मी में अधिक तापमान और शरीर में पानी की कमी से यानी के डिहाइड्रेशन के कारण पेट संबंधी समस्याएं काफी देखने को मिलती हैं। अगर आपको भी पेट की समस्या बनीं रहती हैं, तो एक बार अच्छे डॉक्टर को जरुर दिखाएं। भीषण गर्मी में शरीर से पसीने के रुप में अधिक मात्रा में पानी निकल जाता है। यदि शरीर में पानी की कमी रहती है, तो पेट के अंदर बैड बैक्टीरिया को पनपने के लिए अनुकूल माहौल मिल जाता है। इस कारण से पाचन संबंधी समस्याएं अधिक हो जाती है। शरीर में पानी की कमी के कारण पेट में एसिड की अधिक मात्रा बढ़ जाती है। जिससे पेट और सीने में जलन की समस्या देखने को मिलती है। इतना ही नहीं, पानी की कमी के कारण कब्ज की दिक्कतें बढ़ जाती है। इसके साथ ही पेट फूलना और पेट में गैस बनना आम समस्या बन जाती है।

खानपान में सतर्कता जरुरी है

इन दिनों आप अधिक फैट वाले भोजन से बचें। क्योंकि ज्यादा फैट वाले भोजन का सेवन करने से अपच संबंधी समस्या देखने को मिलती है। पेट में जलन की दिक्कत हो सकती है। गर्मियों में हम सभी आइसक्रीम और अन्य ठंडे पेय पदार्थों का यह सोचकर सेवन करते हैं कि ये ठंडे प्रोडक्ट है, लेकिन ठंडे तापमान और चीनी की अधिक मात्रा का संयोजन पेट संबंधी समस्याएं देखने को मिलती हैं। जिन लोगों को लैक्टोज या डेयरी उत्पादों के प्रति संवेदनशील है, ये प्रोडक्ट पेट में गैस, ऐंठन और दस्त का कारण बन सकते हैं।

पेट संबंधी समस्याओं से इस तरह से करें बचाव

- यदि आपको किडनी संबंधी और पेट संबंधित कोई समस्या है, तो गर्मी के दिनों में कम से कम ढाई से तीन लीटर पानी पिएं।

- इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी होने पर नींबू की शिकांजी, नारियल पानी या ओरआरएस का घोल लें। नारियल पानी पेट के पीएच स्तर को बैलेंस करता है।

- ठंडी तासीर वाले खाद्य पदार्थों का भरपूर सेवन करें, आप दही, छाछ, रायता, लस्सी पी सकते हैं। यह पेट की गर्मी को शांत करता है और पाचनतंत्र भी सही रहता है।

- गर्मी के दिनों में बाहर का खाना खासकर स्ट्रीट फूड खाने से बचें।

- आप बाहर के खाने बजाय घर पर ही फ्रेश खाना खाएं। इस बात का ध्यान रखें कि हल्का और पचने वाला खाना का ही सेवन करें।

किन चीजों से बनाएं दूरी

- अधिक मात्रा में चाय और कॉफी का सेवन न करें।

- तरह-तरह के कार्बोनेटेड ड्रिंक्स का सेवन कम करें।

- डिब्बाबंद और प्रोसेस्ड फूड का सेवन कम करें।

- अत्यधिक ऑयली फूड खाने से बचें।

पेट की गर्मी बढ़ने के कारण

- अगर आप अधिक मसालेदार और तैलीय खाना खाते हैं, तो इससे पेट में एसिड की मात्रा अधिक हो जाती है।

- खानपान में किसी भी प्रकार की अनियमितता, समय से भोजन न करना, अधिक मात्रा में खा लेना, भोजन का बिल्कुल सेवन न करना, देर रात को भोजन करना, इससे पाचनतंत्र प्रभावित रहता है।

- कई बार शरीर में पानी की कमी के कारण पाचनक्रिया खराब हो जाती है और एसिडिटी की मात्रा भी काफी बढ़ जाती है।

- अधिक मात्रा में कैफीन शरीर में पहुंच जाए, तो इससे पेट की अंदरुनी परत में जलन होती है।

- तनाव और चिंता करने से भी शरीर में एसिड उत्पादन हो जाता है। जिससे पेट की गर्मी बढ़ जाती है।

- नींद की कमी, अपर्याप्त नींद के कारण पाचनतंत्र खराब होता है, बल्कि पेट के अंदर की गर्मी को भी बढ़ा देता है।

घरेलू उपाय हैं बहुत लाभकारी

- रात को थोड़ी सूखी धनिया, कच्चा जीरा और सौंफ को भिगों दें। सुबह इन तीनों को पीस लें। इस मिश्रण से एक चम्मच मात्रा लेकर एक गिलास पानी में मिलाकर पिएं। इसमें आप ग्लूकोज भी मिला सकते हैं।

- आप चाहे तो इस मिश्रण को फ्रिज में स्टोर करके रख लें। कच्ची या भुनी हई सौंफ में थोड़ी-सी मिश्री मिलाकर खाने से भी आराम मिलता है।

- इसके अलावा, छाछ के साथ सेंधा नमक, भुना पिसा जीरा मिलाकर पीने से काफी राहत मिलता है। इनसे भूख भी बढ़ जाती है।

- गर्मी में आप मुरब्बा या फिर बेल का शर्बत पी सकते हैं। यह शरीर को काफी आराम देता है। बेल का पाउडर का भी सेवन कर सकते हैं।

- आजवाइन, जीरा, कलौंजी और एक या दो ग्राम हींग, छोटी हर्र देसी घी में पकाकर पीस लें। इसके बाद इसमें थोड़ा-सा सेंधा नमक मिला सकते हैं। खाना खाने के बाद इसे आराम से खा सकते हैं।

- रात के समय मुनक्का के बीज निकालकर पानी में भिगो दें। सुबह इसके सेवन से करने से आराम मिलता है। आप चाहे तो रात को त्रिफला चूर्ण का सेवन भी कर सकते हैं। इसको आप पानी या दूध के साथ ले सकते हैं।

- रात में 25 किशमिश, 2 अंजीर, 5 अखरोट के टुकड़े और 5 बादाम पानी में भिगोकर रख दें। सुबह खाली पेट इन्हें अच्छे से चबाकर खाएं और साथ में एक गिलास दूध पी लें। यह मिश्रण पाचन तंत्र को बेहतर बनाने में मदद करता है। साथ ही बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल और ब्लड प्रेशर को संतुलित रखने में भी सहायक माना जाता है। नियमित सेवन से शरीर को भरपूर ऊर्जा और जरूरी पोषक तत्व मिलते हैं। इन चीजों को स्टील, कांच या चीनी मिट्टी के बर्तन में ही भिगोएं।

- आप तरबूज और खरबूजा भी खा सकते हैं। लेकिन खाने के बाद तुरंत पानी न पिएं।

- आम पन्ना, गन्ने का रस भी काफी लाभदायक होता है।

डॉक्टर को कब दिखाएं?

- अगर आपको घरेलू उपाय के बाद भी आराम न मिलें। फिर भी जलन हो रही है और दर्द बना हुआ है, तो एक बार डॉक्टर जरुर दिखाएं। कई बार-बार उल्टी व दस्त लग रहे हैं, तो डॉक्टर से जरुर मिलें।

बच्चों को चाय-बिस्कुट देना खतरनाक, Anemia समेत 5 बीमारियों का बढ़ता है खतरा

कई घरों में सुबह की शुरुआत आमतौर पर चाय और बिस्कुट या हल्के स्नैक्स से होती है। जब घर के बड़े ऐसा करते हैं, तो बच्चे भी यही आदत अपना लेते हैं। लेकिन हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक यह आदत बच्चों के लिए बिल्कुल अच्छी नहीं होती है। चाय और बिस्कुट से शरीर को जरूरी पोषण नहीं मिल पाता है। वहीं लंबे समय तक ऐसा नाश्ता करने से बच्चे के फिजिकल और मेंटल हेल्थ पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

वहीं बच्चे की इम्युनिटी भी कमजोर हो सकती है। इसलिए जरूरी है कि बच्चे को हेल्दी नाश्ते का ऑप्शन दिया जाए। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि चाय और बिस्कुट बच्चे के लिए अनहेल्दी क्यों है। साथ ही यह बच्चे की फिजिकल और मेंटल हेल्थ पर कैसे बुरा असर डाल सकता है।

चाय-ब स्कि ट क्यों है अनहेल दी

सुबह का नाश्ता बच्चे के पूरे दिन की एनर्जी, ओवरऑल हेल्थ और दिमाग के काम के लिए बहुत जरूरी है। चाय-बिस्कुट में न के बराबर पोषण होता है। बिस्कुट ज्यादातर चीनी, मैदा और अनहेल्दी फैट से बना होता है। इनमें फाइबर, प्रोटीन, मिनरल्स और विटामिन जैसे पोषक तत्व न के बराबर पाए जाते हैं।

वहीं चाय में भी कोई खास पोषण नहीं होता है। चाय और बिस्कुट मिलकर 'खाली कैलोरी' देते हैं। जोकि पेट तो भरते हैं, लेकिन शरीर को जरूरी पोषण और ताकत नहीं देते हैं। इसी वजह से यह कॉम्बिनेशन बच्चों के लिए पूरी तरह से अनहेल्दी है।

एनीम यिा का खतरा

चाय में टैनिन नामक तत्व पाया जाता है। जोकि शरीर में आयरन को सही तरीके से अवशोषित होने से रोकता है। अगर रोज सुबह बच्चा चाय पीता है, तो उनके शरीर में आयरन की कमी हो सकती है। जोकि आगे चलकर एनीमिया का खतरा बढ़ सकता है। इससे बच्चे की इम्युनिटी और ग्रोथ दोनों पर निगेटिव असर पड़ सकता है।

बढ़ सकता है चिड़चिड़ापन

बिस्कुट में चीनी अधिक होती है, जिससे ब्लड शुगर तेजी से बढ़ता है और फिर अचानक से गिर जाता है। इस उतार-चढ़ाव के कारण बच्चे चिड़चिड़े हो सकते हैं। बच्चे का ध्यान कम लगने की शिकायत भी हो सकती है। वहीं बच्चे का बार-बार कुछ अनहेल्दी खाने की इच्छा हो सकती है।

नींद पर असर

बच्चों के लिए कैफीन वाली चाय सही नहीं होती है। यह उनकी नींद को खराब कर सकती है और बेचैनी को बढ़ा सकती है। इससे बच्चे की ध्यान लगाने की क्षमता और व्यवहार भी प्रभावित हो सकता है।

अनहेल दी खाने की इच छा

चाय-बिस्कुट का कॉम्बिनेशन शरीर को ज्यादा देर तक एनर्जी नहीं देता है। थोड़ी देर में बच्चा फिर भूख महसूस करने लगता है। जिससे वह ज्यादा खाना खा सकते हैं। या फिर बार-बार अनहेल्दी स्नैक्स मांग सकते हैं।

कमजोर इम्युनिटी

हर रोज चाय-बिस्कुट खाने से बच्चे के शरीर को पूरा पोषण नहीं मिल पाता है। जिससे बच्चे के विकास पर असर पड़ता है। ऐसी आदत की वजह से बच्चे जल्दी थक जाते हैं और उनकी इम्युनिटी कमजोर हो सकती है। शरीर में पोषक तत्वों खासकर कैल्शियम और आयरन की कमी हो सकती है।

मोटापे की समस्या

ज्यादा चीनी या तला भुना नाश्ता देने से बच्चे का मोटापा बढ़ सकता है। वहीं बच्चे को दांत से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं।

कमजोर हो सकती है याददाश्त

पोषण की कमी वाला नाश्ता बच्चे के दिमाग पर बुरा असर डाल सकता है। बच्चे को कॉन्स्ट्रेशन में समस्या होती है। याददाश्त कमजोर हो सकती है और शिक्षा के प्रदर्शन में भी गिरावट देखने को मिल सकती है।

हेल्दी नाश्ते के ऑप्शन

सांभर और नारियल की चटनी के साथ इडली

दही के साथ होल व्हीट वेजिटेबल पराठा

दूध के साथ पीनट बटर या पनीर सैंडविच

होल ग्रेन टोस्ट के साथ उबले अंडे

दूध और फलों के साथ ओट्स दलिया

मेवे और बीजों के साथ फ्रूट स्मूदी

पनीर स्टफिंग वाला बेसन चिल्ला

मूंगफली के साथ वेजिटेबल पोहा

सब्जियों के साथ उपमा

सादा या मीठा दलिया

जानिए कैसे छुड़ाएं यह आदत

माता-पिता को ध्यान रखना चाहिए कि आदत एकदम से नहीं छूटती है। इसलिए धीरे-धीरे चाय-बिस्कुट की जगह फल, दूध या हेल्दी नाश्ता देना शुरू करें।

बच्चे वही सीखते हैं, जो अपने पेरेंट्स को करते हुए देखते हैं। जब आप हेल्दी नाश्ता करेंगे, तो उसी आदत को बच्चा भी अपनाएगा।

अलग-अलग शेप और अच्छे तरीके से रंग-बिरंगे फलों को सजाकर खाना दें। जो बच्चे को पसंद आए।

रोजाना एक ही समय पर नाश्ता करने की आदत डालें। इससे बच्चे की आदत पड़ जाएगी।

बच्चों को आसान भाषा में यह बताएं कि अच्छा खाना उनके शरीर को ताकत देता है और सीखने व खेलने में मदद करता है।

पेरेंट्स को समझना जरूरी

बता दें कि पेरेंट्स को यह समझना जरूरी हो जाता है कि चाय-बिस्कुट बच्चे को पोषण पूरा नहीं देते हैं। इससे बच्चे के दिमाग और शरीर पर निगेटिव असर पड़ सकता है। इसलिए बच्चे को हमेशा ऐसा नाश्ता देना चाहिए, जो पोषक तत्वों से भरपूर और संतुलित हो। क्योंकि पोषण से भरपूर नाश्ता बच्चों को पूरा दिन के लिए एनर्जी देता है और पढ़ाई में ध्यान लगाने में भी मदद करता है।

रात में भूलकर भी ना खाएं ये फूड्स, वरना पड़ेगा पछताना

खाना शरीर का ईंधन है और इसलिए स्वस्थ रहने के लिए सही भोजन करना बेहद जरूरी है। अक्सर लोग अपनी सेहत का ध्यान रखते हुए घर का खाना ही पसंद करते हैं। लेकिन आप किस समय क्या खा रहे हैं, यह बहुत अधिक मायने रखना है। खासतौर से, रात का खाना आपकी नींद, वजन और पाचन पर सीधा असर डालता है। इसलिए, रात का खाना बेहद सोच-समझकर चुनना चाहिए। हालांकि, अक्सर यह देखने में आता है कि लोग दिन का बचा हुआ खाना ही रात में खा लेते हैं। इससे भले ही उनका पेट भर जाए, लेकिन कहीं ना कहीं सेहत को काफी नुकसान होता है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको ऐसे ही कुछ इंडियन फूड्स के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें आपको रात में खाने से बचना चाहिए-

चावल (White Rice)

अधिकतर घरों में अगर दिन में चावल बने हैं और वह बच गए हैं तो लोग रात में भी उसे खा लेते हैं। लेकिन रात में व्हाइट राइस खाना अच्छा नहीं माना जाता है। दरअसल, इसमें कार्ब्स ज्यादा होते हैं, जो फैट में जल्दी बदलते हैं। साथ ही साथ, इससे ब्लड शुगर भी स्पाइक हो सकता है। चावल खाने के कुछ देर बाद ही आपको फिर से भूख लग सकती है। इसलिए, अगर आपको चावल खाना ही है तो ब्राउन राइस खाएं या फिर चावलों को कम मात्रा में लें।

दही (Curd)

रात के समय दही खाने से भी बचना चाहिए। बहुत से लोगों को रात में दही खाने या फिर फ्रिज की रखी हुई दही खाने से बलगम या सर्दी-खांसी की समस्या हो सकती है। इसके अलावा, कभी-कभी इससे डाइजेशन की समस्या भी हो सकती है।

फ्राइड फूड (Fried Food)

भले ही आपको फ्राइड फूड खाना कितना भी पसंद हो, लेकिन रात में फ्राइड फूड खाने से बचना चाहिए। रात के समय अगर आप समोसा या पकौड़ा खाएंगे तो इससे आपकी नींद खराब होगी। यह बहुत ही हैवी और ऑयली होते हैं, जिससे डाइजेशन की समस्या हो सकती है। साथ ही, इससे आपका वजन भी बढ़ सकता है।

मीठा (Sweet Items)

अगर आपको डिनर के बाद मीठा खाने की आदत है तो इसे आज ही बदल दीजिए। मीठा खाने से एकदम से शुगर स्पाइक होता है, जिससे फैट स्टोरेज बढ़ता है। साथ ही, इससे आपकी क्रेविंग्स भी बढ़ सकती है। खासतौर से, अगर आपको हार्मोनल असंतुलन की समस्या है तो यह आपके लिए और भी ज्यादा नुकसानदायक हो सकता है।

जहां शिव के साथ विराजती हैं शक्ति, विश्व का इकलौता ऐसा मंदिर

शिव भक्त भगवान शिव की कृपा और आशीर्वाद पाने के लिए किसी भी शिवालय में जाकर भगवान शिव की पूजा करते हैं। वहीं भगवान शिव की पूजा करने से जातक के जीवन के कष्टों का अंत होता है। लेकिन द्वादश ज्योतिर्लिंग यानी कि भगवान शिव के 12 शिवलिंगों की पूजा और दर्शन करने का अपना एक अलग महत्व है। धार्मिक मान्यता है कि द्वादश ज्योतिर्लिंगों के दर्शन और सुबह-शाम के स्मरण मात्र से व्यक्ति के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। द्वादश ज्योतिर्लिंग में देवघर के बाबा बैद्यनाथ की पूजा का विशेष महत्व होता है। क्योंकि यह इकलौता ऐसा ज्योतिर्लिंग है, जिसके साथ शक्तिपीठ भी मौजूद है।

कामना ज्योतिर्लिंग

झारखंड के देवघर में द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से बाबा बैद्यनाथ का ज्योतिर्लिंग और शक्तिपीठों में से एक मां पार्वती की शक्तिपीठ एक साथ विराजमान है। जिसकी वजह से बाबा बैद्यनाथ को कामना ज्योतिर्लिंग भी कहते हैं। क्योंकि यहां पर जो भक्त आते हैं, वह भगवान शिव के साथ मां शक्ति की भी पूजा-अर्चना करते हैं और उनकी मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

विश्व का इकलौता ज्योतिर्लिंग

बता दें कि देवघर में बाबा बैद्यनाथ का ज्योतिर्लिंग विश्व का एकमात्र ऐसा ज्योतिर्लिंग है। जहां पर ज्योतिर्लिंग के साथ शक्तिपीठ भी मौजूद है। शिव और शक्ति के एक साथ होने से बाबा नगरी और बाबा बैद्यनाथ का महत्व विश्व विख्यात है।

शिव और शक्ति की पूजा

आध्यात्म जगत में शिव और शक्ति की पूजा का विशेष महत्व होता है। माना जाता है कि भगवान शिव और शक्ति जीवन के दो मूलभूल स्तंभ हैं। वहीं पौराणिक कथाओं के मुताबिक देवघर में मां सती का हृदय गिरा था। जिस वजह से देवघर में भगवान शिव के साथ मां पार्वती का भी निवास है। बाबा नगरी में बसे भगवान शिव और शक्ति के दर्शन के लिए भक्त दूर-दूर से यहां पहुंचते हैं और मां पार्वती और भगवान शिव की एक साथ पूजा की जाती है।

आज का राशिफल

मिस सपाम चानू प्रेमा

ज्योतिष-अंकशास्त्री, इंफाल, मणिपुर।

संपर्क नंबर: 9366411415, ईमेल: chanuprema39@gmail.com

आज का राशिफल (14/05/2026) –सपम चानू प्रेमा (खगोल–अंकशास्त्री)

मेष – आपको थोड़ी निराशा हो सकती है, लेकिन आप मामले को आगे बढ़ाने के इच्छुक नहीं होंगे। आप तनाव और स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति संवेदनशील हो सकते हैं। खर्च बढ़ सकता है, इसलिए इसे संतुलित रखने का प्रयास करें। अवैध गतिविधियों से दूर रहें।

वृषभ – छुट्टियों की खरीदारी शुरू करने के लिए आज का दिन अच्छा है। आपको अच्छी डील मिल सकती है। आपकी आमदनी बढ़ सकती है। व्यापार के लिए, आज का दिन सौभाग्य लेकर आएगा और मुनाफा हो सकता है।

मिथुन – आज आपके करीबी लोगों के साथ आपके संबंध काफी सहज रहेंगे। आज का दिन आपके करियर में उन्नति ला सकता है या आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके काम या परियोजनाओं की सराहना कर सकते हैं।

कर्क – घर और पारिवारिक जीवन की जिम्मेदारियां आप पर भारी पड़ सकती हैं। आपके काम में प्रगति धीमी हो सकती है। आप कड़ी मेहनत करते हैं, लेकिन कुछ मुद्दों के कारण आपकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंच सकता है।

सिंह – व्यवस्थित रहना मुश्किल हो सकता है। सामान्य रूप से सरल कार्यों को पूरा करने में भी अप्रत्याशित रूप से अधिक समय लग सकता है। आपको कुछ स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अवसाद और तनाव का भाव बना रहेगा। अकेलेपन की भावना आपको परेशान कर सकती है।

कन्या – मित्रों के साथ कोई भी मिलन समारोह आनंददायक रहने की संभावना है। आपके जीवन में प्रेम और रोमांस बढ़ेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ स्वस्थ और सुखमय संबंध का आनंद उठा सकते हैं। आपकी आय में भी वृद्धि हो सकती है।

तुला – आपके आर्थिक जीवन में सुखद आश्चर्य या बोनस मिलने की संभावना है। आपको अपनी मेहनत का अच्छा फल मिल सकता है। आप इस समय सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। आपका घरेलू जीवन सुखमय और शांतिपूर्ण रहेगा।

वृश्चिक – आज का दिन घर की सजावट के लिए नई योजना बनाने के लिए अच्छा है। काम में आपका प्रदर्शन आपकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतर सकता है, जिससे आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित हो सकती है। आपको कुछ स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

धनु – काम में धीमी प्रगति हो सकती है। निवेश में नुकसान हो सकता है। खर्चों में भी काफी वृद्धि हो सकती है। आप भावुक हो सकते हैं और कुछ शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

मकर – आज का दिन हर मायने में बड़े सपने देखने का दिन है। स्वरोजगार करने वाले लोग अब अपने व्यवसाय को बढ़ाने में सक्षम हो सकते हैं। आपको कठिनाइयों का सामना करने का साहस मिल सकता है। आपका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी बेहतर हो सकता है।

कुंभ – आज बातचीत और गपशप करने की प्रबल इच्छा के कारण शायद ज्यादा काम करना मुश्किल हो सकता है। आप दुखी महसूस कर सकते हैं और आपके मन में निराशा और हताशा का भाव हावी रहेगा।

मीन – पारिवारिक मामले काफी सुचारू रूप से चलने की संभावना है। आप अपने काम में आत्मविश्वास महसूस करेंगे। आप खुश और संतुष्ट रहेंगे। इस समय धन लाभ भी संभव है। आपको अपनी मेहनत का फल मिल सकता है।

छत्तीसगढका रहस्यमयी निरई माता मंदिर, साल में 5 घंटे खुलता है, खुद जलती है दिव्य प्रकाश

भारत में कई ऐसे मंदिर हैं, जिनसे जुड़ी मान्यताएं हर किसी को हैरान कर देती हैं। ऐसा ही एक मंदिर छत्तीसगढ़ में भी है। छत्तीसगढ़ में मौजूद निरई माता मंदिर के प्रति लोगों की गहरी आस्था और श्रद्धा है। वहीं निरई माता मंदिर से जुड़ी मान्यताएं भी बेहद अनोखी हैं। लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि इस मंदिर में महिलाओं का प्रवेश पूरी तरह से वर्जित है। वहीं साल में सिर्फ 5 घंटे के लिए निरई माता का मंदिर खुलता है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको निरई माता मंदिर से जुड़ी मान्यताओं के बारे में बताने जा रहे हैं।

पूरी होती हैं सभी मनोकामनाएं

छत्तीसगढ़ के धमतरी के मगरलोड क्षेत्र में घने जंगलों और ऊंची पहाड़ियों के बीच स्थित निरई माता भक्तों के लिए आस्था का केंद्र है। दुर्गम रास्तों और उबड़-खाबड़ पहाड़ियों पर स्थित होने के बाद भी भक्त यहां पर दर्शन के लिए आते हैं। इस मंदिर में भक्त देवी मां को नारियल, नींबू और अगरबत्ती भेंट करते हैं। माना जाता है कि इससे मां प्रसन्न होती हैं और जातक की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

अनोखा मंदिर

बता दें कि निरई माता का मंदिर बेहद रहस्यमयी और अनोखा सिद्धपीठ है। यहां पर साल में सिर्फ एक बार यानी कि चैत्र नवरात्रि के पहले रविवार पर सुबह 4 से 9 बजे यानी की मात्र 5 घंटों के लिए खुलता है। सीमित समय के लिए मंदिर खुलने की वजह से भक्तों की मंदिर में भारी भीड़ उमड़ती है।

इस मंदिर में मां की मूर्ति स्थापित नहीं है, बल्कि एक पवित्र गुफा में ज्योत प्रज्वलित होती है। इस ज्योति को लेकर मान्यता है कि नवरात्रि के पावन मौके पर यह ज्योति बिना घी, तेल और माचिस के अपने आप प्रज्वलित हो जाती है।

जानिए क्या हैं मान्यताएं

अगर मंदिर से जुड़ी मान्यताओं की बात की जाए, तो महिलाओं का इस मंदिर में प्रवेश पूरी तरह से वर्जित है। इस मंदिर में सिर्फ पुरुष ही पूजा-पाठ कर सकते हैं। इसके पीछे एक पुरानी किवदंती भी मिलती है। जिसके मुताबिक प्राचीन काल में पहाड़ियों के बीच एक बैगा पुजारी मां निरई की श्रद्धा और सच्चे मन से सेवा करता है, जिससे देवी मां अति प्रसन्न थीं। देवी मां स्वयं पुजारी को स्नान व भोजन कराती थीं। लेकिन इससे पुजारी की पत्नी के मन में संदेह पैदा हो गया। इस बात से देवी बेहद क्रोधित हो गईं और उन्होंने यह आदेश दिया कि भविष्य में कोई भी स्त्री उनका दर्शन नहीं करेगी। तभी यह मान्यता चली आ रही है कि महिलाओं का मंदिर में प्रवेश वर्जित है।

हिमाचल के चामुंडा देवी मंदिर का अद्भुत रहस्य, सपने में आकर मां ने खुद बताई थी जगह

हिमाचल प्रदेश में स्थित चामुंडा देवी मंदिर प्रमुख मंदिरों में से एक माना जाता है। चामुंडा देवी मंदिर पालमपुर से करीब 19 किमी दूर है। यह मंदिर अटूट आस्था और प्राकृतिक सुंदरता का अनोखा संगम है। चामुंडा देवी मंदिर से कई धार्मिक मान्यताएं जुड़ी हुई हैं। एक अत्यंत प्रसिद्ध शक्तिपीठ है, जो माता चामुंडा को समर्पित है। यह स्थान प्राकृतिक सुंदरता से घिरा है। मां चामुंडा के दर्शन के लिए हर रोज हजारों की संख्या में भक्त मंदिर पहुंचते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको चामुंडा देवी मंदिर की खासियत के बारे में बताने जा रहे हैं।

मंदिर की मुख्य खासियत

वहीं 16वीं शताब्दी में चामुंडा देवी का यह मंदिर बनाया गया था। यह मंदिर बनेर नदी के किनारे स्थित है और इसके पीछे धौलाधार पर्वतमाला की बर्फ से ढकी चोटियां बेहद खूबसूरत नजारा पेश करती हैं। इस मंदिर के पीछे एक प्राकृतिक गुफा भी है, जिसको शिव और शक्ति का निवास स्थान माना जाता है।

इस प्राकृतिक गुफा में नंदीकेश्वर महादेव का शिवलिंग है, जिसके दर्शन मात्र के भक्त दूर-दूर से आते हैं। इसलिए इस मंदिर को चामुंडा नंदीकेश्वर धाम के नाम से भी जाना जाता है। वहीं मंदिर के दोनों ओर भैरव जी और हनुमान जी की प्रतिमा बनी है। माना जाता है कि यह दोनों देवी चामुंडा के प्रतिनिधि हैं।

यहां नहीं था चामुंडा देवी का मंदिर

बता दें कि यह मंदिर धौलाधार पर्वत श्रृंखला पर 16 किमी ऊंची चढ़ाई पर था। जहां पहुंच पाना काफी मुश्किल था। भक्तों की इस मुश्किल को हल करने के लिए राजा और एक पुजारी ने देवी मां से प्रार्थना की कि वह मंदिर को आसानी से पहुंच सकने वाली जगह पर स्थापित किए जाने की अनुमति दें।

तब पंडित के सपने में देवी मां ने अपनी सहमति दी। उन्होंने पुजारी को वर्तमान स्थल पर खुदाई करके मूर्ति निकालने का निर्देश दिया। फिर पुजारी ने यह बात राजा को बताया। खुदाई किए जाने पर वहां देवी की मूर्ति मिली। लेकिन राजा के सिपाही इस मूर्ति को उठा न सके। जिसके बाद देवी पंडित के सपने में फिर से प्रकट हुईं और निर्देश दिया कि वह खुद जाकर उस मूर्ति की स्थापना करें। इस तरह से वर्तमान जगह पर चामुंडा मंदिर स्थापित हुआ।

पौराणिक कथा

माना जाता है कि हजारों साल पहले चण्ड और मुण्ड नामक दो शक्तिशाली राक्षस थे, जो इस क्षेत्र में आतंक मचा रहे थे। तब देवी ने काली रूप लेकर भीषण युद्ध में दोनों राक्षसों का वध कर दिया था। इसी वजह से देवी के इस स्वरूप को चामुंडा के नाम से पूजा जाता है।

असम का रहस्यमयी विष्णु मंदिर, जहां मन्नत पूरी होने पर चढ़ाए जाते हैं जिंदा कछुए

भारत के असम राज्य में कामरूप जिले के हाजो में श्री हयग्रीव माधव मंदिर स्थित है। यह मंदिर न सिर्फ अपनी वास्तुकला बल्कि अनोखी परंपराओं के लिए भी फेमस है। मणिकूट पर्वत पर बना यह मंदिर सदियों से बौद्ध और हिंदू धर्म के लोगों के लिए बड़ा आस्था का केंद्र रहा है। इस मंदिर की खासियत यह है कि भक्त भगवान श्रीविष्णु को प्रसन्न करने के लिए कछुए का चढ़ावा करते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको इस मंदिर का महत्व, अनूठी परंपरा और बौद्ध धर्म से खास जुड़ाव के बारे में बताने जा रहे हैं।

मंदिर का पौराणिक महत्व

इस मंदिर का इतिहास काफी प्राचीन है। धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक यहां भगवान श्रीविष्णु के 'हयग्रीव' अवतार की पूजा की जाती है। माना जाता है कि श्रीविष्णु ने इसी स्थान पर मधु-कैटभ नामक दोनों राक्षसों का वध किया था।

माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण 1583 में कोच राजा रघुदेव नारायण द्वारा कराया गया था। वहीं कुछ लोग 100 साल से भी ज्यादा प्राचीन काल के ध्वस्त मंदिर का पुनर्निर्मित रूप मानते हैं। यह मंदिर पत्थरों से बना है और इसकी दीवारों पर हाथियों और अन्य पौराणिक आकृतियों की बेहद सुंदर नक्काशी बनी है।

जानिए अनूठी परंपरा

इस मंदिर की सबसे बड़ी खासियत यहां का 'माधव पुखरी' है। इस तालाब में सैकड़ों दुर्लभ प्रजाति के कछुए रहते हैं। यहां की परंपरा है कि भक्त अपनी मनोकामना पूरी होने पर या फिर भगवान को श्रद्धा अर्पित करने के लिए कछुओं को खाना खिलाते हैं। या फिर तालाब में कछुए छोड़ते हैं। इन कछुओं को भगवान विष्णु का कूर्म अवतार माना जाता है। वहीं स्थानीय लोग इन कछुओं की सुरक्षा का खास ख्याल रखते हैं और इनको कभी नुकसान नहीं पहुंचाते हैं।

बौद्ध धर्म से जुड़ाव

हयग्रीव माधव मंदिर की खासियत यह भी है कि यहां पर सिर्फ हिंदू ही नहीं बल्कि भारी संख्या में बौद्ध अनुयायी भी आते हैं। तिब्बती बौद्धों का मानना है कि यह वही स्थान है, जहां पर स्वयं भगवान बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था। इस कारण बौद्ध अनुयायी इस मंदिर को काफी पवित्र मानते हैं और इसको 'महामुनि' का मंदिर कहते हैं।

श्री हयग्रीव माधव मंदिर संस्कृति, धर्म और वन्यजीव संरक्षण का एक अनूठा उदाहरण है। यहां की शांति और सदियों पुरानी परंपराएं इसको भारत के अन्य मंदिरों से अलग बनाती हैं। वहीं अगर आप असम की यात्रा पर जा रहे हैं, तो हाजो के इस फेमस मंदिर के दर्शन करना न भूलें।

महाभारत अनुभव केंद्र का भ्रमण शैक्षणिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा में सहयोगी : डीसी

युवा पीढ़ी को भारतीय सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने की दिशा में शासन प्रशासन सजग
डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जिलाभर की शिक्षण संस्थाओं से ज्योतिसर के महाभारत अनुभव केंद्र भ्रमण के लिए किया आह्वान

झज्जर, 12 मई। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि सरकार द्वारा कुरुक्षेत्र स्थित ज्योतिसर के महाभारत अनुभव केंद्र के भ्रमण एवं सांस्कृतिक-शैक्षणिक गतिविधियों को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गई है। इस केंद्र के

भ्रमण से विशेषकर युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से रूबरू होने का मौका मिलेगा।

यह केंद्र विद्यार्थियों, शोधार्थियों, पर्यटकों, श्रद्धालुओं और देश-विदेश से आने वाले आगंतुकों के लिए आकर्षण का प्रमुख केंद्र बन रहा है। उन्होंने जिला के स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशनों, युवा संगठनों और सांस्कृतिक संस्थाओं को महाभारत अनुभव केंद्र के भ्रमण के लिए प्रेरित किया है।

डीसी ने कहा कि महाभारत भारतीय सभ्यता, संस्कृति और नैतिक मूल्यों का अमर ग्रंथ है, जो धर्म, कर्म, न्याय, कर्तव्य और आदर्श जीवन के सिद्धांतों का मार्गदर्शन करता है। कुरुक्षेत्र की पावन भूमि, विशेष रूप से ज्योतिसर, वह ऐतिहासिक स्थल है जहां भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को श्रीमद्भगवद्गीता का दिव्य उपदेश दिया था। इसी ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक धरोहर को

आधुनिक तकनीक और आकर्षक प्रस्तुति के माध्यम से संरक्षित एवं प्रदर्शित करने के उद्देश्य से प्रदेश सरकार द्वारा महाभारत अनुभव केंद्र की स्थापना की गई है। इस केंद्र का उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया जाना झज्जर सहित पूरे हरियाणा प्रदेश के लिए गर्व का विषय है।

उन्होंने बताया कि महाभारत अनुभव केंद्र में अत्याधुनिक ऑडियो-विजुअल तकनीक, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और डिजिटल माध्यमों के जरिए महाभारत की कथाओं एवं मूल्यों को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है। डीसी ने कहा कि जिलाभर की विभिन्न संस्थाओं के सक्रिय सहयोग से भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करने तथा युवाओं में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सरकार की यह पहल महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

उन्होंने बताया कि इस केंद्र के भ्रमण एवं संबंधित गतिविधियों के समन्वय के लिए पर्यटन विभाग के सहायक महाप्रबंधक राजपाल को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। अधिक जानकारी के लिए सहायक महाप्रबंधक के संपर्क सूत्र 8742901812 पर संपर्क किया जा सकता है।

झज्जर के बिजली उपभोक्ताओं की आज (14 मई) होगी रोहतक में सुनवाई

झज्जर, 12 मई। उपभोक्ताओं की बिजली एवं बिजली बिल से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के निवारण के उद्देश्य से गुरुवार 14 मई को प्रातः 11 बजे से दोपहर 01 बजे तक चेयरमैन जोनल फॉर्म उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम रोहतक द्वारा चीफ इंजीनियर ओपी, प्रवर्तन परिमण्डल, राजीव गांधी विद्युत सदन, पावर हाउस, रोहतक स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में सुनवाई की जाएगी। प्रवक्ता ने बताया कि इस दौरान चेयरमैन, चीफ इंजीनियर जोनल फॉर्म रोहतक स्वयं उपभोक्ताओं की समस्याएं सुनेंगे तथा उनका त्वरित निवारण सुनिश्चित करेंगे। विशेष रूप से झज्जर जिले के उपभोक्ता भी अपने बिजली बिल संबंधी मामलों (बिजली चोरी को छोड़कर) को बैठक में प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि यदि उपभोक्ता अधीक्षण अभियंता, कार्यकारी अभियंता या उपमंडल अभियंता के निर्णय से संतुष्ट ना हो तो वे अपनी शिकायत चेयरमैन, जोनल फॉर्म रोहतक के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं।

शतरंज प्रतियोगिता का एक यादगार दिन

लेखक – दिव्येश पटेल
कक्षा – तीसरी 'अ'
विद्यालय – बाल भारती पब्लिक स्कूल, सीपत (बिलासपुर)

नमस्कार ! मेरा नाम दिव्येश पटेल है। मैं सात वर्ष का हूँ और बाल भारती पब्लिक स्कूल में कक्षा तीसरी का छात्र हूँ। शतरंज मेरा सबसे प्रिय खेल है और मुझे इसे खेलना बहुत अच्छा लगता है। हाल ही में मुझे जांजगीर में आयोजित एक शतरंज प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिला। मैं अपने परिवार के साथ कार से वहाँ पहुँचा। रास्ते में एक बंद रेलवे फाटक मिला, जहाँ हमें कुछ समय रुकना पड़ा मैंने वहाँ एक साथ आठ रेलगाड़ियों को गुजरते हुए देखा। यह मेरे लिए एक बिल्कुल नया और रोमांचक अनुभव था। मैंने पहली बार एक साथ इतनी सारी ट्रेनें देखीं, जिससे मैं बहुत उत्साहित हो गया। जब मैं प्रतियोगिता स्थल पर पहुँचा, तो देखा कि वहाँ दूर-दूर के जिलों से कई खिलाड़ी आए हुए थे। सभी प्रतिभागी उत्साह औरआत्मविश्वास से भरे हुए थे। मैंने भी पूरे मनोयोग और लगन के साथ प्रतियोगिता में भाग लिया। मैंने अंडर-10 वर्ग में खेला और अच्छे प्रदर्शन के साथ जीत हासिल की। यह मेरे लिए बहुत खुशी और गर्व का क्षण था।इस अनुभव से मैंने सीखा कि हमें जीत और हार दोनों को समान रूप से स्वीकार करना चाहिए। हार हमें नई सीख देती है और जीत हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।यह प्रतियोगिता मेरे जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव बन गई है, जिसे मैं हमेशा याद रखूँगा।

खेरागढ़ में कथित भूमाफिया गिरोह पर गंभीर आरोप...

प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री कार्यालय को भेजी गई शिकायत में करोड़ों के बेनामी जमीनी कारोबार, बैंक लोन घोटाले और स्टाम्प चोरी की जांच की मांग

लखनऊ। आगरा जनपद के खेरागढ़ क्षेत्र में कथित भूमाफिया और संगठित गिरोह के खिलाफ एक गंभीर शिकायत प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री कार्यालय तक पहुंची है। शिकायतकर्ता अमरेन्द्र सिंह ने आरोप लगाया है कि खेरागढ़ निवासी अनिल कुमार गर्ग उर्फ "अन्नी डीलर" वर्षों से सुनियोजित तरीके से जमीन खरीद-फरोख्त, बैंक ऋण अनियमितताओं और बेनामी संपत्तियों के जरिए करोड़ों रुपये का अवैध कारोबार चला रहा है।

शिकायत में दावा किया गया है कि आरोपी ने अपने परिजनों और सहयोगियों के साथ मिलकर एक संगठित नेटवर्क तैयार किया, जिसके माध्यम से गरीब किसानों और मजदूरों को ट्रैक्टर ऋण दिलाने के नाम पर बड़े पैमाने पर वित्तीय अनियमितताएं की गईं। आरोप है कि किसानों की जमीनों पर जरूरत से अधिक ऋण स्वीकृत कराकर भारी धनराशि अर्जित की गई और बाद में उसी धन से जमीनों की खरीद-फरोख्त का कारोबार फैलाया गया।

करोड़ों की संपत्तियों और बेनामी कारोबार का आरोप

प्रार्थनापत्र में आरोप लगाया गया है कि अनिल कुमार गर्ग और उसके परिवार के नाम पर खेरागढ़, आगरा, दिल्ली और वृंदावन सहित कई स्थानों पर आलीशान मकान, फ्लैट, शोरूम, गार्डन, कोल्ड स्टोरेज, पेट्रोल पंप मार्केट और अन्य व्यावसायिक संपत्तियां मौजूद हैं।

शिकायतकर्ता का दावा है कि इनमें से कई संपत्तियां बेनामी हैं और उनकी आय का विवरण आयकर अभिलेखों में स्पष्ट रूप से

दर्ज नहीं है। शिकायत में यह भी कहा गया है कि वर्ष 2017 से 2025 के बीच 132 संपत्तियों के खरीद-फरोख्त में 13 करोड़ रुपये से अधिक का लेनदेन हुआ, जिसमें करोड़ों रुपये के स्टाम्प शुल्क और कर चोरी की आशंका जताई गई है।

ट्रैक्टर लोन और बैंकिंग अनियमितताओं का भी आरोप

शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि ट्रैक्टर फाइनेंस के नाम पर एक ही ट्रैक्टर पर दो अलग-अलग बैंकों से ऋण स्वीकृत कराए गए। आरोप है कि बाद में ऋण माफी योजनाओं का लाभ उठाकर बैंकिंग प्रणाली को नुकसान पहुंचाया गया, जबकि वास्तविक लाभार्थियों को इसकी जानकारी तक नहीं हुई। इसके अलावा शिकायत में यह भी कहा गया है कि राजस्थान और मध्यप्रदेश में बड़े पैमाने पर ट्रैक्टरों की बिक्री और वित्तीय लेनदेन में भी अनियमितताएं की गईं।

पूरे मामले की जांच और कार्यवाही की मांग

करोड़ों के बेनामी जमीनी कारोबार, बैंक लोन घोटाले, स्टाम्प चोरी, एवं वित्तीय लेनदेन में की गयी अनियमितताओं और बेनामी संपत्तियों के जरिए करोड़ों रुपये के अवैध कारोबार की जांच कराई जाएं और दोषियों के खिलाफ़ क़ानूनी कार्यवाही सुनिश्चित की जाए।

खुले नाले में महिला व बच्चा गिरने के बाद नगर निगम को लिखा पत्र संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित

मथुरा : बृज यातायात एवं पर्यावरण जन जनजागरूकता समिति रजि उत्तर प्रदेश के संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने मथुरा वृंदावन नगर निगम के नगर आयुक्त को पत्र लिखकर, नगर आयुक्त से मांग मांग करते हुए बताया मथुरा-वृंदावन नगर निगम द्वारा वर्तमान में व्यापक स्तर पर नालों की सफाई कराई जा रही है, जो एक सराहनीय कार्य है। किंतु यह देखने में आ रहा है कि सफाई के उपरांत कई स्थानों पर नालों को खुला छोड़ दिया जाता है, जिससे गंभीर दुर्घटनाओं की संभावना लगातार बनी रहती है।

खुले नालों के कारण मथुरा जनपद में अब तक कई हादसे हो चुके हैं। हाल ही में दो दिन पूर्व महिला व उसका बच्चा कृष्णा नगर क्षेत्र में भी एक गंभीर घटना घटित हुई है। ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने हेतु आवश्यक है कि नालों की सफाई के तुरंत बाद उन्हें सुरक्षित रूप से ढकवाया जाए, जिससे किसी भी प्रकार की अनहोनी घटना से आमजन को बचाया जा सके।

साथ ही, नालों की सफाई के दौरान निकाला गया कचरा एवं गंदगी लंबे समय तक नालों के किनारे ही छोड़ दी जाती है, जिससे यातायात बाधित होता है, ट्रैफिक जाम की स्थिति उत्पन्न होती है तथा कचरा सूखकर वायु प्रदूषण को बढ़ावा देता है। इसके अतिरिक्त वही कचरा पुनः नालों में पहुंचकर सफाई व्यवस्था को भी प्रभावित करता है। संस्थापक अध्यक्ष

विनोद दीक्षित ने नगर आयुक्त से कहा कि जनहित

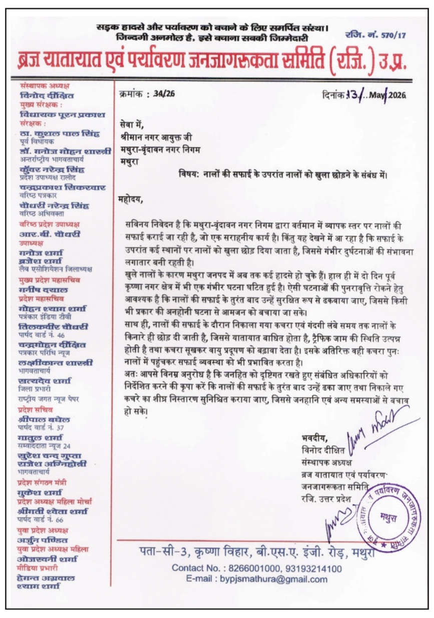

ब्रज यातायात एवं पर्यावरण जनजागरूकता समिति (रजि.) उ.प्र.

श्रीपाल बघेल
पार्षद वार्ड नं. 37
मातुल शर्मा
सम्वाददाता न्यूज 24
सुरेश चन्द गुप्ता
राजेश अग्निहोत्री
भागवताचार्य
प्रदेश संगठन मंत्री
मुकेश शर्मा
प्रदेश अध्यक्ष महिला मोर्चा
श्रीमती श्वेता शर्मा
पार्षद वार्ड नं. 66
युवा प्रदेश अध्यक्ष
अर्जुन पण्डित
युवा प्रदेश अध्यक्ष महिला
ओजस्वनी शर्मा
मीडिया प्रभारी
हेमन्त अग्रवाल
श्याम शर्मा

भवदीय,
विनोद दीक्षित
संस्थापक अध्यक्ष
ब्रज यातायात एवं पर्यावरण
जनजागरूकता समिति
रजि. उत्तर प्रदेश

पता-सी-3, कृष्णा विहार, बी.एस.ए. इंजी. रोड़, मथुरा
Contact No. : 8266001000, 93193214100
E-mail : bypjsmathura@gmail.com

को दृष्टिगत रखते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करने की कृपा करें कि नालों की सफाई के तुरंत बाद उन्हें ढका जाए तथा निकाले गए कचरे का शीघ्र निस्तारण सुनिश्चित कराया जाए, जिससे जनहानि एवं अन्य समस्याओं से बचाव हो सके।

2806 वोटों की शानदार जीत से उकलाना की 23 वर्षीय बेटी रीमा सोनी बनी नपा चेयरमैन दी बधाई - सुरेन्द्र वर्मा एवं पुरूषोतम सोनी

जश्न का माहौल युवा सोच से उकलाना के विकास को नई दिशा मिलेगी - सुनील एवं प्रिंस सोनी

हरियाणा हिसार: राजेश सलूजा

उकलाना की 23 वर्षीय बेटी रीमा सोनी नगरपालिका की चेयरमैन बनी है। उन्होंने अपनी निकटतम प्रतिद्वन्दी बीजेपी की प्रत्याशी निकिता गोयल को 2806 वोटों से हराया। निर्दलीय रीमा सोनी को 7078 वोट प्राप्त हुए और बीजेपी के निकिता गोयल को 4272 वोट मिले। डा सोनिया बत्रा गुलाटी 249 वोटों के साथ तीसरे नम्बर पर रही जबकि मीनू को 83 वोट मिले। मीनू ने रीमा सोनी को समर्थन दे दिया था। उकलाना नगरपालिका के कुल 16 वार्डों में 15507 में से 11744 मतदाताओं ने मतदान किया था। रीमा सोनी के चेयरमैन बनने पर नगरपालिका उकलाना क्षेत्र में खुशी व जश्न का माहौल है। विधायक नरेश सेलवाल एवं चेयरमैन रीमा सोनी के नेतृत्व में जन विजयी काफिला उकलाना के बीडीपीओ आफिस मतगणना केन्द्र से राधास्वामी सत्संग भवन, गांव उकलाना होते हुए पुरानी अनाज मण्डी, लाला लाजपतराय चौंक होते हुए भगतसिंह मार्केट कार्यालय पहुंचे। रास्ते में जगह-जगह लोग एक दूसरे को मिठाई खिलाकर पुष्प वर्षा व फूलमालाओं डालकर रीमा सोनी को बधाई एवं शुभकामनाएं दे रहे हैं। नगरपालिका उकलाना के रिटर्निंग अधिकारी कम उपमण्डल अधिकारी नागरिक बरवाला अश्वीर नैन ने रीमा सोनी को नपा चेयरमैन निर्वाचित होने का प्रमाणपत्र सौंपा और शुभकामनाएं भी दी। लोक सम्पर्क विभाग हरियाणा के रिटायर्ड डीआईपीआरओ सुरेन्द्र कुमार वर्मा कोथ,पुरूषोतम सोनी,रायसाहब सोनी,प्रिंस व सुनील सोनी,वेदप्रकाश वर्मा,बलबीर खरल,रमेश सोनी,राजेन्द्र सोनी,संजीव व अन्य महानुभावों ने चेयरमैन रीमा सोनी,उसके पिता महेन्द्र सोनी,माता मल्लिका सोनी,बहन पूजा व नन्दनी,दादी सुमित्रा समेत समस्त परिवार को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं दी। लोक सम्पर्क अधिकारी रिटायर्ड सुरेन्द्र वर्मा ने कहा कि रीमा सोनी युवा सोच नई ऊर्जा के साथ उकलाना के विकास को नई दिशा देगीं और हर वार्ड की जन समस्याओं का निराकरण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगीं। चेयरमैन रीमा सोनी का कहना है कि जन सेवा ही उनका संकल्प है। सबके सहयोग से बेहतर गलियां,सड़कें,शिक्षा,चिकित्सा,स्वच्छ पेयजल

व सीवरेज व्यवस्था,साफ सफाई व स्वच्छता,नशामुक्ति की तरफ उनका विशेष फोकस रहेगा। उन्होंने शानदार जीत के लिए मतदाताओं का आभार भी व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी जीत जनता की जीत है जिन्होंने पूर्ण सहयोग एवं समर्थन देकर उन्हें चेयरमैन की कुर्सी पर बैठाने का काम किया। बधाई एवं शुभकामनाएं देने वालों में विधायक नरेश सेलवाल,कांग्रेस के जिला ग्रामीण प्रधान बृजलाल बहबलपुरिया व माटी कला बोर्ड हरियाणा के पूर्व चेयरमैन भूपेन्द्र गंगवा, प्रधान विजेन्द्र कपूर जग्गू बिठमडा, डा सोनम सिंहमार, सुमन, जोगेन्द्र भामा उर्फ बबलू सोनी, कृष्ण सोनी, महेन्द्र सोनी, राजबीर सोनी, इंजि० वेदप्रकाश सोनी, एड नरेश सोनी, मंजू,सपना, बबली, मनीषा, सीता, मीनू , सतबीर, रमेश सोनी, ऋषिपाल, पितरूमल, रामदिया, प्रमुख समाज सेवी रिंकू वर्मा, ऋषिपाल, बनारसीदास, प्रवीण, नरेन्द्र छपारिया, सुभाष सोनी, रामकुमार भट्टू वाले, कृष्ण देवाल, रिटायर्ड मा हरदेवसिंह, देवदत कडैल़, ब्लाक समिति मैम्बर सिकन्दर सोनी गंगवा, अनिल सोनी अलवर एवं अन्य बन्धू भी शामिल रहे।

रेटिनोब्लास्टोमा जागरूकता अभियान के तहत मरीजों को दी गई महत्वपूर्ण जानकारी

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मथुरा रोड़ स्थित बीएचआरसी - डॉ. श्रॉफ चैरिटी आई केयर इंस्टीट्यूट द्वारा ₹रेटिनोब्लास्टोमा जागरूकता अभियान₹ के अंतर्गत अस्पताल परिसर में विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।जिसका उद्देश्य मरीजों एवं उनके परिजनों को रेटिनोब्लास्टोमा (आंख के कैंसर) जैसी गंभीर बीमारी के प्रति जागरूक करना तथा समय रहते पहचान, सावधानी एवं उचित उपचार के बारे में जानकारी प्रदान करना रहा।

नेत्र विशेषज्ञ डॉ. मान्या ने मरीजों एवं अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों की आंखों की नियमित जांच कराने से बीमारी की प्रारंभिक अवस्था में पहचान संभव हो सकती है। उन्होंने कहा कि समय पर उपचार मिलने से न केवल बच्चे की दृष्टि सुरक्षित रखी जा सकती है बल्कि उसका जीवन भी बचाया जा सकता है। उन्होंने अभिभावकों से बच्चों की आंखों में किसी भी प्रकार की असामान्यता दिखाई देने पर तुरंत अस्पताल में जांच कराने की अपील की।

कार्यक्रम के दौरान अस्पताल टीम द्वारा मरीजों एवं उनके परिजनों को जागरूकता संबंधी सामग्री वितरित की गई तथा बीमारी से बचाव, लक्षण एवं उपलब्ध उपचार सुविधाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही उपस्थित लोगों के प्रश्नों का समाधान करते हुए उन्हें नियमित नेत्र जांच के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि रेटिनोब्लास्टोमा मुख्य रूप से छोटे बच्चों में होने वाला आंख का कैंसर है।जिसकी समय पर पहचान एवं उपचार अत्यंत आवश्यक है। यदि बच्चों की आंखों में सफेद चमक दिखाई दे, आंखें तिरछी हो जाएं, लगातार लालिमा बनी रहे अथवा आंखों से लगातार पानी आए तो इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए और तुरंत नेत्र विशेषज्ञ से परामर्श लेना चाहिए।

अस्पताल के वरिष्ठ प्रशासक सी.पी. मैसी ने कहा कि समाज में जागरूकता फैलाना अत्यंत आवश्यक है।जिससे लोग गंभीर नेत्र रोगों के प्रति सजग हो सकें। उन्होंने बताया कि अस्पताल भविष्य में भी इस प्रकार के जनजागरूकता कार्यक्रम लगातार आयोजित करता रहेगा। ताकि अधिक से अधिक लोगों तक स्वास्थ्य संबंधी सही जानकारी पहुंचाई जा सके।

इस मौके पर डॉ. अनीज़ा, डॉ. प्रवीण, अनिमेष दास, गौरव कुमार, मुकेश कुमार, मनोज चौधरी, राजबाबू, लखन लाल, रामपाल सहित अस्पताल के अन्य कर्मचारी एवं मरीज उपस्थित रहे।

रिद्धनाथ वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बालक, हिसार का कक्षा 12वीं का परीक्षा परिणाम रहा अव्वल

हरियाणा हिसार: राजेश सलूजा

आप सभी के लिए बड़े गर्व और गौरव का विषय है कि आपके अपने रिद्धनाथ सीनियर सेकेंडरी स्कूल बालक हिसार का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत के साथ-साथ बहुत शानदार रहा। कक्षा 12वीं में विद्यालय के कुल 68 बच्चों ने परीक्षा दी और उसमें से 51 बच्चों ने बोर्ड मेरिट हासिल की यानी 75% बच्चों ने 80% से ऊपर अंक हासिल किए। जिसमें से 13 बच्चे 90% से ऊपर रहे। 85% से 90% के बीच में 21 बच्चे रहे और 80% से 85% के बीच में 17 बच्चे रहे। इन बच्चों में पहला स्थान प्रेरणा पुत्री श्री राजेंद्र सिंह, गांव बीचपड़ी ने हासिल किया। प्रेरणा ने यह प्रथम स्थान हासिल करने के लिए 97.2% अंक हासिल किए। द्वितीय स्थान ज्योति सुपुत्री श्री ओमप्रकाश, गांव संदोल ने 96.2% हासिल करके प्राप्त किया और प्रिया सुपुत्री श्री राजपाल, गांव संदोल ने साइंस स्ट्रीम में 96% अंक हासिल करके तृतीय स्थान प्राप्त किया। अलग-अलग विषयों में कुल मिलाकर 11 बच्चों ने 100 में से 100 अंक हासिल किए और 11 बच्चों ने ही अलग-अलग विषयों में 100 में से 99 अंक हासिल किए। आज इस अवसर पर विद्यालय संचालक श्री साधु राम रेड्डू जी ने सभी अध्यापकों और बच्चों को बहुत-बहुत बधाई दी और साथ में विद्यालय प्राचार्य श्री रामाअवतार सिंह जी ने भी अध्यापकों और बच्चों के प्रदर्शन को खूब सराहा। बच्चों के शानदार प्रदर्शन को देख विद्यालय प्रबंधक श्री जगदीप सिंह रेड्डू आज फूले नहीं समा रहे थे। सभी अध्यापक और सभी बच्चे इस अवसर पर अत्यंत उत्साहित थे। बच्चों की इस शानदार जीत के लिए सभी अभिभावकों को भी बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

हनी ट्रैप में फंसा बुजुर्ग सीए, अपहरण कर मांगी 50 लाख की फिरौती; सेना जवान समेत चार आरोपी गिरफ्तार

दक्षिण जिला पुलिस ने 36 घंटे में सुलझाया सनसनीखेज मामला, नकदी-जेवरात और वाहन बरामद

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। दक्षिण जिला पुलिस ने हनी ट्रैप, अपहरण और लूट की एक गंभीर वारदात का खुलासा करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इस मामले ने राजधानी में सनसनी फैला दी, क्योंकि गिरफ्तार आरोपियों में एक ऐसा व्यक्ति भी शामिल है, जो सेना में कार्यरत रहा है और बहादुरी के लिए सम्मानित भी किया जा चुका है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से लाखों रुपये की नकदी, सोने के आभूषण, महत्वपूर्ण दस्तावेज, एक एयर गन और वारदात में इस्तेमाल की गई कार बरामद की है। पुलिस के अनुसार, घटना 2 मई की शाम की है, जब दक्षिण दिल्ली के सैनिक फार्म इलाके में रहने वाले 72 वर्षीय चार्टर्ड अकाउंटेंट मनमोहन गुप्ता अपने घर पर अकेले थे। इसी दौरान उनकी परिचित महिला कल्पना कुमारी उनसे मिलने के बहाने उनके घर पहुंची। जैसे ही उन्होंने दरवाजा खोला, महिला के साथ आए अन्य आरोपी भी जबरन अंदर घुस गए और बुजुर्ग को बंधक बना लिया। इसके बाद आरोपियों ने घर में रखी नकदी, सोने की अंगूठियां, बैंक कार्ड, आधार कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस सहित अन्य जरूरी दस्तावेज लूट लिए।

वारदात यहीं नहीं रुकी, बल्कि आरोपियों ने पीड़ित को उनकी ही टोयोटा कैमरी कार में जबरन बैठाया और दिल्ली से बाहर ले गए। रास्ते में उन्होंने पीड़ित पर दबाव बनाते हुए 50 लाख रुपये की फिरौती मांगी और उसके परिचितों से 15 लाख रुपये की व्यवस्था करने को कहा। हालांकि जब उनकी योजना पूरी तरह सफल नहीं हो सकी, तो आरोपी पीड़ित को दिल्ली-मुंबई हाईवे पर हरियाणा के फिरोजपुर झिरका क्षेत्र के पास छोड़कर फरार हो गए। पीड़ित किसी तरह पास के एक ढाबे तक पहुंचा और पुलिस को घटना की सूचना दी।

मामले की गंभीरता को देखते हुए नेब सराय थाना पुलिस ने तुरंत विशेष टीम गठित कर जांच शुरू की। तकनीकी सर्विलांस, सीसीटीवी फुटेज और स्थानीय खुफिया सूचनाओं के आधार पर लगातार छापेमारी की गई। महज 36 घंटे के भीतर पुलिस ने इस मामले का खुलासा करते हुए मुख्य आरोपी कल्पना कुमारी और सुरेंद्र को उत्तर प्रदेश के मथुरा से गिरफ्तार कर लिया। इनके कब्जे से करीब चार लाख रुपये नकद और पीड़ित का पर्स बरामद किया गया।

जांच में सामने आया कि कल्पना और सुरेंद्र की पहचान सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम के जरिए हुई थी, जिसके बाद दोनों ने आर्य समाज मंदिर में विवाह कर लिया। सुरेंद्र भारतीय सेना में कार्यरत रहा है और वर्ष 2021 में जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा क्षेत्र में आतंकियों के साथ मुठभेड़ के दौरान घायल हुआ था। पुलिस के अनुसार, दोनों ने मिलकर बुजुर्ग को हनी ट्रैप में फंसाने की साजिश रची थी और अन्य साथियों के साथ मिलकर इस वारदात को अंजाम दिया।

इसके बाद पुलिस ने फरार चल रहे दो अन्य आरोपियों कुलदीप और सुशील को हरियाणा के फतेहाबाद जिले से गिरफ्तार कर लिया। उनके पास से शेष नकदी और सोने की चेन भी बरामद की गई।

दक्षिण जिला पुलिस का कहना है कि इस कार्रवाई के साथ ही हनी ट्रैप, अपहरण और लूट में शामिल पूरे गिरोह का पर्दाफाश हो गया है। पुलिस ने इसे त्वरित कार्रवाई, तकनीकी जांच और विभिन्न टीमों के बीच बेहतर समन्वय का परिणाम बताया है। मामले में आगे की जांच जारी है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि आरोपियों ने इससे पहले भी इस तरह की वारदातों को अंजाम दिया है या नहीं।

कुदरत का कहर और मौत का तांडव... थम गई खुशियां, पसरा मातम! 💔 आंधी-तूफान और बारिश ने निगल ली 6 जिंदगियां, मातम में बदला जनजीवन

सत्यम मिश्रा

बदायूं: आज बदायूं में प्रकृति ने ऐसा रौद्र रूप दिखाया कि हंसते-खेलते परिवारों की दुनिया ही उजड़ गई। तेज आंधी-तूफान और बेमौसम बारिश ने जिले में भारी तबाही मचाई है, जिसमें दो मासूम बच्चों समेत 6 लोगों की जान चली गई। यह केवल खबर नहीं, उन परिवारों पर टूटा दुखों का पहाड़ है।

तबाही के वो मंजर, जिसने सबका दिल दहला दिया:

बिसौली-रानेट मार्ग: एक डम्फर पर भारी पेड़ गिरने से चालक जोगेश की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। अपने परिवार का सहारा पल भर में छिन गया। सिद्धपुर कैथोली: सबसे ज्यादा हृदयविदारक घटना यहाँ हुई, जहाँ तूफान से बचने के लिए एक मड़ैया (झोपड़ी) में छिपी दो नन्ही कलियां—मौसमी और रजनी—दीवार गिरने के कारण मलबे में दब गईं। उन मासूमों को क्या पता था कि जहाँ वो पनाह ले रही हैं, वही उनकी अंतिम जगह बन जाएगी।

फतेहपुर: अपने मूक पशुओं को बचाने की कोशिश में 60 वर्षीय रामश्री ने अपनी जान गंवा दी। टीन शेड पर पेड़ गिरने से यह हादसा हुआ।

तुर्क परौली (फैजगंज बेहटा): यहाँ भी प्रकृति का कहर लक्ष्मी देवी पर टूटा, पेड़ की चपेट में आने से उनकी भी मृत्यु हो गई।

सिरतोल (बिल्सी): जानमाल के साथ-साथ पशुधन को भी भारी नुकसान हुआ है, यहाँ पेड़ गिरने से एक भैंस की मौत हो गई।

प्रशासन अलर्ट पर 🚖 🚑

सूचना मिलते ही पुलिस और राहत टीमें मौके पर पहुंच गई हैं। बचाव कार्य जारी है, लेकिन जो नुकसान हो चुका है, उसकी भरपाई नामुमकिन है।

हमारी अपील:

कुदरत के इस कहर के सामने हम बेबस हैं, लेकिन सावधान जरूर रह सकते हैं। कृपया खराब मौसम में जर्जर इमारतों, पेड़ों और बिजली के खंभों से दूर रहें। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगतों की आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिजनों को यह असहनीय दुख सहने की शक्ति दें। ॐ शांति!

शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी से मिले डॉ मनीष पंकज मिश्रा, नई जिम्मेदारी पर दी बधाई

परिवहन विशेष न्यूज़

गयाजी। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता डॉ मनीष पंकज मिश्रा ने बिहार सरकार में नई जिम्मेदारी मिलने पर बिहार के शिक्षा मंत्री श्री मिथिलेश तिवारी से शिष्टाचार मुलाकात कर उन्हें अंग वस्त्र एवं विष्णु चरण चिन्ह भेंट कर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।इस अवसर पर डॉ मनीष पंकज मिश्रा ने कहा कि मिथिलेश तिवारी जी एक कर्मठ, ईमानदार एवं दूरदर्शी नेता हैं, जिनके नेतृत्व में बिहार की शिक्षा व्यवस्था को नई दिशा और मजबूती मिलेगी।डॉ मिश्रा ने कहा कि आज बिहार शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है तथा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं बिहार सरकार के मार्गदर्शन में राज्य में शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने की दिशा में निरंतर कार्य किया जा रहा है।उन्होंने विश्वास जताया कि शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी अपने अनुभव एवं कार्यकुशलता के बल पर विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं शिक्षा विभाग से जुड़े सभी लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरेंगे। अंत में उन्होंने उनके सफल एवं जनहितकारी कार्यकाल की कामना करते हुए पुनः शुभकामनाएं दीं।

ड्रोन निगरानी से लैस हुआ गया रेलवे स्टेशन, यात्रियों की सुरक्षा पर आरपीएफ की पैनी नजर

परिवहन विशेष न्यूज़

गयाजी। यात्रियों की सुरक्षा एवं स्टेशन परिसर में विधि-व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ), गया द्वारा रेलवे स्टेशन परिसर में ड्रोन के माध्यम से नियमित निगरानी की जा रही है। इस दौरान प्लेटफार्म, सर्कुलेटिंग एरिया, प्रवेश एवं निकास द्वार, पार्किंग स्थल, यार्ड सहित अन्य संवेदनशील स्थानों पर विशेष नजर रखी जा रही है। ड्रोन से प्राप्त लाइव वीडियो के आधार पर संदिग्ध व्यक्तियों एवं गतिविधियों पर सतर्क निगरानी रखते हुए आवश्यकतानुसार त्वरित कार्रवाई की जा रही है। वहीं, भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों में विशेष निगरानी कर भीड़ नियंत्रण में भी सहायता ली जा रही है। अभियान के दौरान रेलवे सुरक्षा बल एवं राजकीय रेल पुलिस (जीआरपी) के बीच बेहतर समन्वय स्थापित कर संयुक्त रूप से सुरक्षा व्यवस्था को और सुदृढ़ किया गया। ड्रोन निगरानी के कारण स्टेशन परिसर में सुरक्षा व्यवस्था बेहतर हुई है तथा यात्रियों में सुरक्षा का विश्वास बढ़ा है। आरपीएफ अधिकारियों ने बताया कि गया रेलवे स्टेशन परिसर एवं यार्ड की 24 घंटे ड्रोन के माध्यम से निगरानी की जाएगी। ड्रोन संचालन के लिए आरपीएफ के बल सदस्यों को विशेष प्रशिक्षण भी दिया गया है। अभियान के दौरान स्टेशन परिसर में सभी गतिविधियां सामान्य पाई गईं।

सफलता की नई इबारत: सीबीएसई 12वीं में विद्यालय का शत-प्रतिशत रिजल्ट, माही ने बनाए 99.8%

परिवहन विशेष न्यूज़

गयाजी। सीबीएसई द्वारा घोषित कक्षा 12वीं के परीक्षा परिणाम में विद्यालय के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए शत-प्रतिशत सफलता हासिल की। परीक्षा में कुल 96 छात्र-छात्राएं शामिल हुए और सभी सफल घोषित किए गए। इनमें 8 विद्यार्थियों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया।

वाणिज्य संकाय में माही कुमारी ने 500 में से 499 अंक प्राप्त कर 99.8 प्रतिशत के साथ विद्यालय में प्रथम स्थान हासिल किया। माही ने बिजनेस स्टडीज, अकाउंटेंसी, इन्फॉर्मेशन प्रैक्टिस एवं अर्थशास्त्र विषय में 100 में 100 अंक प्राप्त कर उत्कृष्ट उपलब्धि दर्ज की। वहीं परी प्रिया ने 95.8 प्रतिशत अंकों के साथ द्वितीय तथा सृष्टि ने 95.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान हासिल किया।

विज्ञान संकाय में अमन कुमार ने 94.6 प्रतिशत अंकों के साथ गणित वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि दिव्या कुमारी ने बायोलॉजी वर्ग में 85.6 प्रतिशत अंकों के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया।

विद्यालय के प्राचार्य श्री अशोक कुमार गुप्ता ने विद्यार्थियों की सफलता का श्रेय उनकी मेहनत, अभिभावकों के सहयोग एवं शिक्षकों के समर्पित शिक्षण को दिया। उन्होंने भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट परिणाम देने का भरोसा जताया। वहीं उप प्राचार्य श्री हरि सिंह मीणा ने प्राचार्य के कुशल नेतृत्व एवं शिक्षकों की मेहनत की सराहना करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

कम्पनी का कलर शीट गायब करने वाले तीन अभियुक्त गिरफ़्तार

परिवहन विशेष न्यूज़

गोरखपुर। चौरीचौरा थानाक्षेत्र के सरैया स्थित टाटा स्टील गोदाम से टाटा कलर शीट को गाड़ी सहित गायब करने के मामले में चौरीचौरा पुलिस ने तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके कब्जे से 114 अदद टाटा कलर शीट और घटना में प्रयुक्त डीसीएम गाड़ी को भी बरामद किया है। पुलिस ने तीनों अभियुक्तों को न्यायालय में प्रस्तुत किया। जहां से तीनों को जेल भेज दिया गया।

घटना की जानकारी देते हुए पुलिस ने बताया कि वादी राकेश कुमार मिश्रा निवासी नन्दानगर थाना एम्स ने तहरीर देकर बताया था कि वह सरैया सरदारनगर में स्थित टाटा स्टील के स्टॉक यार्ड में प्रबन्धक के तौर पर नियुक्त हैं। 11 अप्रैल को टाटा कलर शीट भेजने के लिए श्रीनेत ट्रांसपोर्ट सर्विस के मालिक रविन्द्र सिंह के माध्यम से एक ट्रक मंगवाया गया। गाड़ी स्टॉक यार्ड में आई, उस पर 596847 रुपए कीमत का टाटा कलर शीट लोड कर लक्ष्मी स्टील कन्नौज के नाम का बिल और गेट पास देकर रवाना किया गया। लेकिन अगले दिन से ही ड्राइवर का मोबाइल स्विच ऑफ बताने लगा। ड्राइवर पूरे माल के साथ गायब है। इस मामले में धारा 316(2), 317(2), 317(5), 319(2) के तहत केस पंजीकृत कर मामले की जांच शुरू की गई। सर्विलांस के माध्यम से गायब ट्रक को माल सहित बरामद करते हुए इस मामले में तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्तों में पिंटू उर्फ सत्येंद्र कटियार पुत्र बाबूराम कटियार निवासी सिकंदरा, थाना सिकंदरा जिला कानपुर देहात, राजन पांडेय पुत्र विनोद पांडेय निवासी गुजैनी उद्योग नगरी घाटमपुर थाना गोविंदनगर जिला कानपुर देहात और सूरज शुक्ला पुत्र स्व. रामबहादुर शुक्ला निवासी सुजीत शुक्ला का पुरवा थाना बाजार शुकुल जिला अमेठी शामिल हैं। गिरफ्तार अभियुक्तों के पास से 114 अदद टाटा कलर शीट और घटना में प्रयुक्त ट्रक भी बरामद किया गया है।

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया हनुमान मंदिर स्थापना दिवस

परिवहन विशेष न्यूज़

गोरखपुर। श्री श्री हनुमंत धाम हनुमान मंदिर सरदार नगर चौरी चौरा पर बुधवार को स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। स्थापना दिवस के अवसर पर दोपहर में महिला मंडल द्वारा भजन कीर्तन किया गया।

भजन संध्या में भजन गायक कलाकार पवन सिंह द्वारा भजन प्रस्तुत किया गया। भक्ति संगीत व भजन के बाद हलवा, चना, लड्डू का प्रसाद श्रद्धालुओं में वितरित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर समिति द्वारा किया गया। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष रमा निवास पांडेय, पुजारी राधेश्याम दुबे, पवन सिंह, विवेक दूबे, कृपाशंकर शुक्ल, पिंटू राय, धीरज पांडेय, दीनानाथ मोदनवाल, कृष्णगोपाल ओझा, पिंटू प्रजापति, नेकीराम शर्मा, विनोद सिंह, रामलखन यादव सहित तमाम श्रद्धालु उपस्थित रहे।

हल्की बारिश और तेज हवाओं से मिली गर्मी से राहत

परिवहन विशेष न्यूज़

गोरखपुर। तेज चिल्लाती धूप और गर्मी से आम जनमानस हैरान परेशान हो चुका था। मई के शुरुआत से लेकर 8 मई तक मौसम जहां सामान्य रहा और लोगों को गर्मी का एहसास नहीं हुआ वहीं 08 मई के बाद मौसम धीरे-धीरे बदलना शुरू हुआ और तापमान बढ़ता गया। लोगों को चिलचिलाती धूप और गर्मी से दो चार होना पड़ा। 13 मई बुधवार को जब सुबह हुई तो आसमान में बादल छाए नजर आए। इस दौरान मंद मंद शीतल हवा भी चलतीं रहीं जिससे लोगों को थोड़ी राहत मिली। फिर जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया वैसे-वैसे गर्मी और धूप बढ़ती गई। दोपहर में तेज धूप और गर्मी से लोगों का सामना हुआ। दोपहर बाद 4:00 बजे के लगभग मौसम फिर बदला और आसमान में बादल छा गए। करीब 5:00 बजते बजते तेज हवाओं के साथ हल्की बारिश गरज चमक के साथ शुरू हो गई जो कुछ मिनिटों के बाद फिर बंद हो गईं। हल्की बारिश से मौसम थोड़ा ठंडा हुआ वहीं लोगों को गर्मी से राहत मिली। मौसम के जानकारों की मानें तो एक दो दिन तक ऐसे ही मौसम रह सकता है। इस तेज हवाओं के साथ शुरू हुई हल्की बारिश से शादी विवाह वाले घरों में लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ा। इस बारिश से किसी प्रकार की क्षति और नुकसान की समाचार लिखे जाने तक कोई खबर नहीं थीं। यह बारिश सब्जियों के लिए लाभदायक जरूर है। समाचार लिखे जाने तक पुनः बूंदाबादी शुरू हो गई थी।

परशुराम सेवा समित-चन्दौली (उ0प्र0) द्वारा सपा प्रवक्ता के प्रति रोष

भगवान परशुराम सेवा समिति के बैनर तले ब्राह्मण समाज के लोगों ने समाजवादी पार्टी के प्रवक्ता राजकुमार भाटी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते हुए प्रतीकात्मक पुतला फूंका

अनूप तिवारी - चंदौली

ब्राह्मण समाज पर की गई कथित अभद्र टिप्पणी को लेकर लोगों में भारी आक्रोश देखने को मिला। समिति के अध्यक्ष सत्यमूर्ति ओझा ने कहा कि वर्तमान समय में ब्राह्मण समाज के खिलाफ जिस प्रकार की अमर्यादित भाषा और अपशब्दों का प्रयोग किया जा रहा है, वह अत्यंत निंदनीय है। उन्होंने कहा कि समाज किसी भी स्थिति में इस प्रकार की टिप्पणी को बर्दाश्त नहीं करेगा।

प्रदर्शनकारियों ने मांग करते हुए कहा कि समाजवादी पार्टी नेतृत्व राजकुमार भाटी के खिलाफ तत्काल कठोर कार्रवाई करे तथा उन्हें पार्टी से निष्कासित किया जाए। साथ ही मामले में विधिक कार्रवाई की भी मांग उठाई गई।

कोषाध्यक्ष अनूप तिवारी ने कहा अब किसी भी हालत में ब्राह्मण पर अमर्यादित टिप्पणी बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।। चाहे इसके लिए हमें सड़कों पर उतरना पड़े,, जो हमें बाध्य करेगा वोह भुगतान करेगा।

कृष्णानंद पाण्डेय ने कहा कि ब्राह्मण समाज के प्रति नफरत फैलाने वाली बयानबाजी सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने का कार्य कर रही है, जिसकी जितनी निंदा की जाए कम है।

इस दौरान समिति के पंकज पाण्डेय, चंदन पाण्डेय, रवि तिवारी, राजू पाण्डेय, पंकज मिश्र, राहुल तिवारी, संजय पाण्डेय, मिथिलेश पाण्डेय, बब्बू पाण्डेय, जितेंद्र तिवारी, राहुल मिश्र, सत्येंद्र मिश्र सहित कई पदाधिकारी व ब्राह्मण समाज के लोग उपस्थित रहे।

गणित में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

● डॉ. विजय गर्ग

हर वर्ष 12 मई को पूरी दुनिया में "गणित में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस" मनाया जाता है।

यह दिवस उन महिलाओं के सम्मान में समर्पित है जिन्होंने गणित के क्षेत्र में असाधारण योगदान दिया, नई खोजें कीं और यह सिद्ध किया कि प्रतिभा का कोई लिंग नहीं होता। यह दिन केवल एक उत्सव नहीं बल्कि प्रेरणा, समानता और शिक्षा के अधिकार का प्रतीक भी है। विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और आधुनिक समाज की प्रगति में गणित की केंद्रीय भूमिका है, इसलिए इस क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना मानवता के भविष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इस दिवस को मनाने के लिए 12 मई की तिथि विशेष रूप से चुनी गई क्योंकि यह महान ईरानी गणितज्ञ मरियम मिर्ज़ाख़ानी का जन्मदिन है। वे दुनिया की पहली महिला थीं जिन्हें गणित का सर्वोच्च सम्मान माना जाने वाला "फील्ड्स मेडल" प्राप्त हुआ। वर्ष 2014 में मिला यह सम्मान केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं था, बल्कि दुनिया भर की करोड़ों लड़कियों के लिए आशा और प्रेरणा का संदेश था कि महिलाएँ भी गणित के सबसे ऊँचे शिखरों तक पहुँच सकती हैं।

गणित को अक्सर "ब्रह्मांड की भाषा" कहा जाता है। प्रकृति के नियमों से लेकर अंतरिक्ष अनुसंधान तक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता से लेकर अर्थव्यवस्था तक, हर क्षेत्र में गणित की भूमिका महत्वपूर्ण है। आज मोबाइल फोन, इंटरनेट, मौसम पूर्वानुमान, चिकित्सा विज्ञान, इंजीनियरिंग, बैंकिंग और कंप्यूटर प्रोग्रामिंग — सभी गणित पर आधारित हैं। फिर भी इतिहास में लंबे समय तक महिलाओं को शिक्षा और अनुसंधान के समान अवसर नहीं मिले। सामाजिक रूढ़ियों और भेदभाव के कारण अनेक प्रतिभाशाली महिलाएँ अपने सपनों को पूरा नहीं कर सकीं।

प्राचीन काल में भी कुछ साहसी महिलाओं ने गणित के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई। मिस्र और यूनान की प्रसिद्ध विदुषी हाइपेटिया को दुनिया की शुरुआती महिला गणितज्ञों में गिना जाता है। उन्होंने उस समय गणित और खगोल विज्ञान पढ़ाया जब महिलाओं के लिए शिक्षा प्राप्त करना अत्यंत कठिन था। बाद में रूस की गणितज्ञ सोफिया कोवालेवस्काया आधुनिक यूरोप की पहली महिला बनीं जिन्हें गणित में डॉक्टरेट की उपाधि मिली। उन्होंने गणितीय विश्लेषण और भौतिकी में महत्वपूर्ण कार्य किए।

इसी प्रकार जर्मनी की महान गणितज्ञ एमी नोएथर ने बीजगणित और सैद्धांतिक भौतिकी में क्रांतिकारी योगदान दिया। "नोएथर प्रमेय" आधुनिक भौतिकी का आधार माना जाता है और इसका प्रभाव अल्बर्ट आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धांत तक दिखाई देता है। उस समय महिलाओं को विश्वविद्यालयों में पढ़ाने की अनुमति तक नहीं थी, फिर भी उन्होंने अपनी प्रतिभा से दुनिया को प्रभावित किया।

आधुनिक युग में भी अनेक महिलाओं ने गणित के क्षेत्र में इतिहास रचा है। अमेरिकी गणितज्ञ करेन उहलेनबेक एबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली महिला बनीं। इसी तरह इंग्रिड डाउबेचीज़ ने वेवलेट सिद्धांत में महत्वपूर्ण कार्य किया, जिसका उपयोग चिकित्सा इमेजिंग और डिजिटल तकनीक में होता है। इन महिलाओं ने यह साबित किया कि गणित केवल पुस्तकों का विषय नहीं, बल्कि मानव जीवन को बदलने वाली शक्ति है।

गणित में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का मुख्य उद्देश्य लड़कियों और महिलाओं को गणित तथा विज्ञान के क्षेत्र में आगे आने के लिए प्रेरित करना है। दुनिया के अनेक देशों में आज भी यह धारणा मौजूद है कि गणित लड़कों का विषय है। कई छात्राएँ गणित से डरने लगती हैं क्योंकि समाज उन्हें यह विश्वास नहीं दिलाता कि वे भी उत्कृष्ट वैज्ञानिक या इंजीनियर बन सकती हैं। यह दिवस ऐसे मिथकों को तोड़ने का प्रयास करता है।

आज विश्वभर के स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय और वैज्ञानिक संस्थान इस अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित करते हैं। गणितीय प्रतियोगिताएँ, व्याख्यान, कार्यशालाएँ, विज्ञान मेले, छात्रवृत्तियाँ और प्रेरक सत्र आयोजित किए जाते हैं ताकि छात्राओं का आत्मविश्वास बढ़े। शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका भी यहाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि बचपन से ही लड़कियों को प्रोत्साहन मिले, तो वे विज्ञान और गणित के क्षेत्र में अद्भुत उपलब्धियाँ हासिल कर सकती हैं।

भारत की गणितीय परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। प्राचीन भारतीय गणितज्ञ आर्यभटा, ब्रह्मगुप्ता एवं श्रीनिवास रामानुजा ने विश्व गणित को नई दिशा दी। आज भारतीय महिलाएँ भी गणित, सांख्यिकी, कंप्यूटर विज्ञान और डेटा विज्ञान के क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दे रही हैं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान , भारतीय सांख्यिकी संस्थान और अन्य विश्वविद्यालयों में महिला शोधकर्ताओं की संख्या लगातार बढ़ रही है।

गणित केवल अंकों और सूत्रों का विषय नहीं है; यह सोचने, तर्क करने और समस्याओं को हल करने की कला है। जब बच्चे गणित सीखते हैं, तो वे अनुशासन, धैर्य, रचनात्मकता और तार्किक सोच भी सीखते हैं। इसलिए लड़कियों को गणित से जोड़ना केवल शिक्षा का प्रश्न नहीं बल्कि समाज के समग्र विकास का मुद्दा है।

आज दुनिया कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष अनुसंधान और चिकित्सा जैसी जटिल चुनौतियों का सामना कर रही है। इन सभी समस्याओं के समाधान में गणित की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि महिलाओं की प्रतिभा को समान अवसर मिले, तो वे इन चुनौतियों के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। विज्ञान और तकनीक का भविष्य तभी मजबूत होगा जब उसमें महिलाओं और पुरुषों की समान भागीदारी होगी। गणित में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हमें यह संदेश देता है कि हर लड़की के भीतर एक वैज्ञानिक, शोधकर्ता या गणितज्ञ बनने की क्षमता होती है। आवश्यकता केवल अवसर, प्रोत्साहन और विश्वास की है। समाज को यह समझना होगा कि शिक्षा में समानता केवल अधिकार नहीं बल्कि प्रगति की शर्त है। जब कोई लड़की गणित की समस्या हल करती है, तो वह केवल एक प्रश्न का उत्तर नहीं खोजती, बल्कि वह अपने आत्मविश्वास, स्वतंत्र सोच और भविष्य की संभावनाओं का निर्माण करती है। इसलिए हमें ऐसी दुनिया बनानी होगी जहाँ हर बच्ची बिना किसी डर या भेदभाव के अपने सपनों को पूरा कर सके।

गणित में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस केवल महिलाओं का सम्मान नहीं, बल्कि मानव बुद्धिमत्ता, समानता और वैज्ञानिक प्रगति का उत्सव है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि संख्याएँ दुनिया बदल सकती हैं — और महिलाएँ गणित की दुनिया बदल सकती हैं।

बच्चों के लिए मैगजीन : कल्पना, ज्ञान एवं विकास की एक खिड़की

डॉ विजय गर्ग

डिजिटल स्क्रीन और तेज गति वाली सामग्री के प्रभुत्व वाले युग में, बच्चों की पत्रिकाएं युवा दिमागों को पोषित करने में एक विशेष स्थान रखती हैं। ये पत्रिकाएं केवल कहानियों और चित्रों का संग्रह नहीं हैं; वे सीखने, रचनात्मकता और चरित्र निर्माण के शक्तिशाली उपकरण हैं। रंगीन लेआउट, आकर्षक सामग्री और इंटरैक्टिव गतिविधियों के साथ डिज़ाइन की गई बच्चों की पत्रिकाएं शिक्षा और मनोरंजन के बीच एक पुल का काम करती हैं।

बच्चों के विकास संबंधी पत्रिकाएँ

बच्चों के लिए साहित्य सदियों से अस्तित्व में है, लेकिन बच्चों की पत्रिकाएँ अपेक्षाकृत आधुनिक विकास हैं। भारत में, उन्होंने 20वीं सदी में पाठ्यपुस्तकों के अलावा पढ़ने के लिए एक पूरक स्रोत के रूप में लोकप्रियता हासिल की। समय के साथ, इन पत्रिकाओं में विज्ञान, पर्यावरण, संस्कृति और नैतिक मूल्यों जैसे विविध विषय शामिल हो गए। एनसीईआरटी जैसे प्रकाशनों को युवा शिक्षार्थियों के लिए, विशेष रूप से प्रारंभिक कक्षाओं में, सुलभ पठन सामग्री उपलब्ध कराने हेतु शुरू किया गया।

आज, बच्चों की पत्रिकाएं विभिन्न भाषाओं और प्रारूपों में उपलब्ध हैं, जो अलग-अलग आयु समूहों और रुचियों को पूरा करती हैं।

बच्चों के लिए पत्रिकाएँ क्यों महत्वपूर्ण हैं

पढ़ने की आदतों को विकसित करना

बच्चों के लिए पत्रिकाएँ अक्सर पढ़ने की दुनिया में एक बच्चे का पहला कदम होती हैं। उनके छोटे लेख, जीवंत चित्र और सरल भाषा पढ़ने को आनंददायक और कम डरावनी बनाती हैं। नियमित रूप से पढ़ने से शब्दावली, समझ और जीवन भर पढ़ने के प्रति प्रेम का निर्माण होता है।

रचनात्मकता और कल्पना को बढ़ाना

कहानियाँ, कविताएँ, पहेलियाँ एवं कॉमिक्स बच्चों की कल्पनाशक्ति को उत्तेजित करते हैं। वे बच्चों को विभिन्न दुनियाओं में ले जाते हैं, तथा उन्हें रचनात्मक ढंग से सोचने और नए विचारों का अन्वेषण करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

शैक्षणिक शिक्षा का समर्थन करना

पत्रिकाएँ कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा को पूरक बनाती हैं; इनमें विज्ञान संबंधी तथ्यों से लेकर ऐतिहासिक कहानियों तक की विविध सामग्री उपलब्ध होती है। वे बच्चों को विभिन्न लेखन शैलियों और विषयों से परिचित कराते हैं, जिससे सीखना अधिक गतिशील और आकर्षक हो जाता है।

नैतिक और सामाजिक मूल्यों का निर्माण करना

बच्चों की पत्रिकाओं में अक्सर ऐसी कहानियाँ शामिल होती हैं जो ईमानदारी, दयालुता एवं सहयोग जैसे मूल्यों को सिखाती हैं। शोध से पता चलता है कि ऐसी पत्रिकाएं युवा पाठकों तक नैतिक और सामाजिक मूल्यों को पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

जिज्ञासा और अन्वेषण को प्रोत्साहित करना

वास्तविक दुनिया के विषयों को रोचक तरीके से प्रस्तुत करके, पत्रिकाएं जिज्ञासा पैदा करती हैं। चाहे वह अंतरिक्ष, वन्यजीव या आविष्कारों के बारे में हो, वे बच्चों को प्रश्न पूछने और उत्तर खोजने के लिए प्रेरित करते हैं।

एक अच्छी बच्चों की पत्रिका की मुख्य विशेषताएँ

एक उच्च गुणवत्ता वाली बच्चों की पत्रिका में आमतौर पर निम्नलिखित शामिल होते हैं

लघु कथाएँ और नैतिक कहानियाँ

विज्ञान और पर्यावरण पर जानकारीपूर्ण लेख

पहेलियाँ, प्रश्नोत्तरी एवं खेल

चित्रकारी एवं शिल्पकला जैसी रचनात्मक गतिविधियाँ

कॉमिक्स और चित्र

ये तत्व पत्रिकाओं को इंटरैक्टिव और आकर्षक बनाते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि बच्चे सीखते समय भी रुचि बनाए रखें।

बच्चों के लिए पत्रिकाएँ बनाम डिजिटल मीडिया

जबकि डिजिटल प्लेटफॉर्म व्यापक जानकारी प्रदान करते हैं, वे अक्सर निष्क्रिय उपभोग की ओर ले जाते हैं। इसके विपरीत, पत्रिकाएं सक्रिय पठन और भागीदारी को प्रोत्साहित करती हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि बच्चे अक्सर डिजिटल स्क्रीन की तुलना में प्रिंट सामग्री पर बेहतर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो विचलित करने वाला हो सकता है।

पत्रिकाएँ भी एक ऐसा अनुभव प्रदान करती हैं, जिसमें पृष्ठ पलटने, पहेलियाँ सुलझाने एवं अगले अंक की प्रतीक्षा करने का आनंद शामिल होता है... लेकिन डिजिटल मीडिया इसे पूरी तरह से दोहराना नहीं सकता।

माता-पिता और शिक्षकों की भूमिका

माता-पिता और शिक्षक बच्चों के लिए पत्रिकाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आयु-उपयुक्त पत्रिकाएं शुरू करके तथा नियमित रूप से पढ़ने को प्रोत्साहित करके, वे बच्चों को स्वस्थ पठन आदतें विकसित करने में मदद कर सकते हैं। घर पर या कक्षाओं में पत्रिका की विषय-वस्तु पर चर्चा करने से समझ और आलोचनात्मक सोच में और वृद्धि हो सकती है।

चुनौतियाँ और आगे का रास्ता

अपने लाभों के बावजूद, बच्चों की पत्रिकाओं को स्क्रीन समय बढ़ने और पढ़ने की आदतों में कमी के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालाँकि, कई प्रकाशक प्रिंट को डिजिटल सुविधाओं के साथ जोड़कर अनुकूलन कर रहे हैं, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि पत्रिकाएँ आधुनिक युग में प्रासंगिक बनी रहें। उनके महत्व को बनाए रखने के लिए, यह आवश्यक हैः बच्चों के बीच पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा दें सस्ती एवं सुलभ पत्रिकाएँ उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें विविध एवं समावेशी सामग्री शामिल करें

एआई परिवर्तन 2026 तक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने बच्चों के लिए सामग्री बनाने एवं उसका उपयोग करने की प्रक्रिया में क्रांति ला दी है।

हाइपर-पर्सनलाइजेशनः अब एआई उपकरण पत्रिकाओं को व्यक्तिगत संस्करण प्रदान करने की अनुमति देते हैं; ऐसी कहानियों में बच्चे का अपना नाम, रूप एवं रुचियाँ शामिल होती हैं।

लोकतांत्रिक चित्रणः एआई मॉडलों ने उत्पादन लागत को कम कर दिया है, जिससे स्वतंत्र प्रकाशक ₹वाटरकलर स्टोरीबुक₹ से लेकर ₹डिजिटल वेक्टर₹ तक की शैलियों में सुंदर चित्रों वाली पत्रिकाएँ तैयार करने में सक्षम हो गए हैं

इंटरैक्टिव प्रिंटः 2026 में प्रकाशित कुछ पत्रिकाओं में QR-लिंक्ड ₹स्मार्ट प्ले₹ सुविधाएँ शामिल हैं; इन सुविधाओं के तहत एआई द्वारा संचालित वॉइस असिस्टेंट बच्चों को पहेलियों से अवगत कराते हैं, या वास्तविक समय में कहानियाँ सुनाते हैं।

4. पत्रिकाएँ अभी भी क्यों महत्वपूर्ण हैं सोशल मीडिया और वीडियो प्लेटफॉर्म के उदय के बावजूद, बच्चों की पत्रिकाएं विकासात्मक साक्षरता के लिए महत्वपूर्ण बनी हुई हैं पढ़ने की आदतः वे छोटे-छोटे पाठ खंडों के साथ एक ₹कम जोखिम वाला₹ पठन वातावरण प्रदान करते हैं; यह पूर्ण उपन्यास की तुलना में विकासशील पाठकों के लिए कम चुनौतीपूर्ण है। दृश्य साक्षरताः साइडबार, इन्फोग्राफ़िक्स एवं लेबल वाले आरेखों का उपयोग बच्चों को गैर-रैखिक जानकारी को समझने में मदद करता है। यह डिजिटल युग के लिए एक महत्वपूर्ण कौशल है। मीडिया शिक्षाः शिक्षक इन पत्रिकाओं का उपयोग बच्चों को यह सिखाने के लिए करते हैं कि संपादकीय सामग्री और विज्ञापन के बीच अंतर कैसे किया जाए, जो मीडिया साक्षरता में एक आधारभूत कदम है। मजेदार तथ्यः जबकि कई वयस्क पत्रिकाएं पूरी तरह से डिजिटल हो गई हैं, बच्चों की प्रिंट पत्रिकाओं ने उल्लेखनीय लचीलापन दिखाया है। पृष्ठ पलटने और हाथ से पहेली सुलझाने की शारीरिक क्रिया संज्ञानात्मक विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनी हुई है

निष्कर्ष

बच्चों के लिए पत्रिकाएँ सिर्फ पढ़ने की सामग्री ही नहीं हैं; वे बच्चे की विकास यात्रा में सहायक भी होती हैं। वे युवाओं को शिक्षित करते हैं, उनका मनोरंजन करते हैं एवं उन्हें प्रेरित भी करते हैं; इस कारण युवा लोगों के दिमागों में महत्वपूर्ण बदलाव आते रहते हैं। तेजी से बदलती दुनिया में, ये पत्रिकाएं बच्चों में जिज्ञासा, रचनात्मकता और चरित्र को पोषित करने के लिए एक मूल्यवान उपकरण बनी हुई हैं।

आज बच्चों को पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना, कल की अधिक जानकार, कल्पनाशील और विचारशील पीढ़ी में निवेश है।

परंपराओं की बारात या आधुनिकता का प्रदर्शन?

डॉ विजय गर्ग

भारतीय संस्कृति में विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, बल्कि दो परिवारों, परंपराओं और संस्कारों का संगम होता है। इस पवित्र बंधन में "बारात" का विशेष महत्व रहा है। बारात सिर्फ दूल्हे की यात्रा नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा, उत्सव, परंपरा और सामूहिकता का प्रतीक रही है। समय के साथ, हालांकि, बारात के स्वरूप और उससे जुड़े संस्कारों में गहरे बदलाव देखने को मिल रहे हैं, जो समाज के बदलते मूल्यों और जीवनशैली को दर्शाते हैं।

बारात का पारंपरिक स्वरूप

पुराने समय में बारात एक सादगीपूर्ण, गरिमामय और सामूहिक आयोजन हुआ करता था। गांवों और कस्बों में बारात निकलना एक उत्सव की तरह होता था, जिसमें पूरे समुदाय की भागीदारी होती थी। ढोल-नगाड़ों की धुन, लोकगीतों की मिठास और पारंपरिक परिधानों की गरिमा इस आयोजन को विशेष बनाती थी।

बारात का उद्देश्य केवल आनंद लेना नहीं, बल्कि रिश्तों को मजबूत करना और सामाजिक बंधनों को सुदृढ़ करना भी था। इसमें बड़े-बुजुर्गों का आशीर्वाद, पारिवारिक मूल्यों का प्रदर्शन और सांस्कृतिक परंपराओं का पालन प्रमुख होता था।

आधुनिकता की दस्तक

वर्तमान समय में बारात का स्वरूप काफी बदल चुका है। अब पारंपरिक ढोल-नगाड़ों की जगह डीजे और तेज़ संगीत ने ले ली है। भव्य सजावट, महंगे वाहन, और दिखावे की प्रवृत्ति ने इस आयोजन को अधिक खर्चीला बना दिया है।

आजकल बारात में शामिल होने वाले लोग भी कई बार इसे केवल एक मनोरंजन कार्यक्रम के रूप में देखते हैं, जहां नृत्य और शोर-शराबा मुख्य आकर्षण बन गए हैं। इससे बारात के मूल संस्कार और उसकी गरिमा कहीं न कहीं पीछे छूटती जा रही है।

संस्कारों का क्षरण या परिवर्तन?

यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या यह बदलाव संस्कारों का क्षरण है या समय के साथ उनका स्वाभाविक परिवर्तन? एक ओर, आधुनिकता ने लोगों को अपनी पसंद और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक मूल्यों का ह्रास भी देखने को मिल रहा है।

संस्कारों का मूल उद्देश्य समाज में संतुलन, सम्मान और सामंजस्य बनाए रखना है। यदि बारात केवल प्रदर्शन और प्रतिस्पर्धा का माध्यम बन जाए, तो उसका सांस्कृतिक महत्व कम हो जाता है।

सामाजिक प्रभाव

बारात के बदलते स्वरूप का सामाजिक प्रभाव भी स्पष्ट है।

आर्थिक दबावः भव्य बारात और महंगे आयोजनों के कारण कई परिवारों पर आर्थिक बोझ बढ़ता है।

दिखावे की प्रवृत्तिः समाज में प्रतिस्पर्धा और दिखावा बढ़ता है, जिससे वास्तविक भावनाएं पीछे छूट जाती हैं।

संस्कारों की अनदेखीः पारंपरिक रीति-रिवाजों और बुजुर्गों के मार्गदर्शन को कम महत्व दिया जाने लगा है।

सकारात्मक बदलाव भी

हालांकि, हर परिवर्तन नकारात्मक नहीं होता। आजकल कई लोग सादगीपूर्ण विवाह और सीमित बारात का विकल्प चुन रहे हैं। "नो डीजे" या "ग्रीन वेडिंग" जैसे विचार भी उभर रहे हैं, जो पर्यावरण और सामाजिक संतुलन के लिए सकारात्मक संकेत हैं।

इसके अलावा, लड़कियों और उनके परिवारों के प्रति सम्मान और समानता की भावना भी धीरे-धीरे बढ़ रही है, जो एक स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक है।

संतुलन की आवश्यकता

समाज के विकास के साथ परंपराओं का बदलना स्वाभाविक है, लेकिन यह जरूरी है कि हम अपनी जड़ों से जुड़े रहें। बारात का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि संस्कारों और संबंधों का उत्सव होना चाहिए।

हमें यह समझना होगा कि सादगी, सम्मान और सामूहिकता ही भारतीय विवाह की असली पहचान हैं। यदि आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाया जाए, तो बारात एक बार फिर अपने वास्तविक स्वरूप में लौट सकती है।

बारात भारतीय विवाह पद्धति का एक अनिवार्य अंग रही है, लेकिन समय के साथ इसके स्वरूप, संस्कारों और सामाजिक दृष्टिकोण में व्यापक बदलाव आए हैं।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और संस्कार

पारंपरिक रूप से बारात का अर्थ था—वर पक्ष का वधू के द्वार पर पूरे मान-सम्मान के साथ आगमन। इसमें सादगी, मर्यादा और लोकगीतों की प्रधानता होती थी। घोड़ी पर सवार दूल्हा, पीछे चलते परिवार के बुजुर्ग और ढोल-नगाड़ों की थाप पर थिरकते आत्मीय जन एक सामूहिक उल्लास का प्रतीक थे।

उस समय बारात का मुख्य उद्देश्य 'संस्कार' था। बारात का स्वागत 'मिलनी' जैसे मधुर संस्कारों से होता था, जहाँ दोनों परिवारों के सदस्य एक-दूसरे को गले लगाकर प्रेम और सद्भाव का परिचय देते थे। भोजन और स्वागत में प्रदर्शन की जगह 'अपनत्व' अधिक होता था।

बदलते दौर में बारात का आधुनिक स्वरूप

आज के आधुनिक और वैश्वीकृत समाज में बारात का स्वरूप पूरी तरह बदल चुका है। अब यह केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि *'स्टेटस सिंबल'* (सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक) बन गई है।

* *तड़क-भड़क और प्रदर्शनः* अब ढोल-नगाड़ों की जगह डीजे और हाई-टेक साउंड सिस्टम ने ले ली है। आतिशबाजी और लाइटों के अत्यधिक प्रदर्शन ने इसे एक इवेंट का रूप दे दिया है।

* *डेस्टिनेशन वेडिंग का बढ़ता चलनः* अब बारातें केवल पड़ोस के शहर या गांव तक सीमित नहीं हैं। 'डेस्टिनेशन वेडिंग' के दौर में बारातें सात समंदर पार भी जा रही हैं, जिससे विवाह की सादगी कहीं ओझल होती जा रही है।

* *समय और अनुशासन का अभावः* पहले बारात के आगमन का एक निश्चित समय होता था, लेकिन अब देर रात तक चलने वाली बारातें और सड़कों पर घंटों लगने वाले ट्रैफिक जाम ने इसे एक सामाजिक समस्या बना दिया है।

संस्कार बनाम शोरः एक गंभीर चिंतन

समाज के बदलते मूल्यों ने 'संस्कार' और 'दिखावे' के बीच की रेखा को धुंधला कर दिया है। बारात में बढ़ता शोर-शराबा और शराब का बढ़ता प्रचलन अक्सर विवादों का कारण बनता है। जिस उत्सव में आनंद और आशीर्वाद होना चाहिए, वह कई बार शोर और अभद्रता की भेंट चढ़ जाता है।

इसके साथ ही, विवाह पर होने वाला अत्यधिक खर्च मध्यम और निम्न वर्ग के परिवारों पर एक मनोवैज्ञानिक और आर्थिक दबाव बनाता है। समाज में यह धारणा गहरी होती जा रही है कि बारात जितनी बड़ी होगी, प्रतिष्ठा उतनी ही अधिक बढ़ेगी

समाज परिवर्तनशील है और परंपराओं का बदलना स्वाभाविक है, लेकिन बदलाव ऐसा होना चाहिए जो हमारी मूल संस्कृति और मानवीय मूल्यों को सुरक्षित रखे। हमें बारात की भव्यता और संस्कारों की गरिमा के बीच एक संतुलन बनाने की आवश्यकता है।

* *सादगी को प्रोत्साहनः* शादियों में फिजूलखर्ची की जगह सादगी और अर्थपूर्ण रीति-रिवाजों को महत्व देना चाहिए।

* *सामाजिक जिम्मेदारीः* बारात के दौरान आम जनता को असुविधा न हो और पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे (जैसे ध्वनि प्रदूषण और पटाखे), यह सुनिश्चित करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

निष्कर्ष

बारात, संस्कार और बदलता समाज—ये तीनों एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। बदलाव समय की मांग है, लेकिन अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

जब हम दिखावे से ऊपर उठकर रिश्तों की सच्चाई और संस्कारों की गरिमा को प्राथमिकता देंगे, तभी बारात केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि जीवन के सबसे सुंदर और अर्थपूर्ण उत्सव के रूप में बनी रहेगी।

स्वास्थ्य से सिनेमा तक: एआई का बढ़ता दायरा

डॉ विजय गर्ग

21वीं सदी के इस दौर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) केवल एक तकनीकी अवधारणा नहीं रह गई है, बल्कि यह हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बनती जा रही है। कभी विज्ञान-कथाओं में दिखाई देने वाली यह तकनीक आज स्वास्थ्य सेवाओं से लेकर मनोरंजन उद्योग तक अपनी गहरी छाप छोड़ रही है। एआई का विस्तार जितना तेज़ है, उतना ही व्यापक और प्रभावशाली भी है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में एआई की क्रांति

स्वास्थ्य सेवाओं में एआई ने अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं। आज मशीनें जटिल बीमारियों का निदान करने में डॉक्टरों की सहायता कर रही हैं। मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग जैसे तकनीकी मॉडल एक्स-रे, एमआरआई और सीटी स्कैन की रिपोर्ट्स का विश्लेषण कर रोगों की पहचान अधिक सटीकता से कर रहे हैं। कैंसर, हृदय रोग और न्यूरोलॉजिकल विकारों की शुरुआती पहचान अब पहले से अधिक संभव हो पाई है।

इसके अलावा, एआई आधारित रोबोटिक सर्जरी ने ऑपरेशन को अधिक सुरक्षित और सटीक बना दिया है। व्यक्तिगत चिकित्सा की दिशा में भी एआई महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जहां मरीज के जीन, जीवनशैली और मेडिकल इतिहास के आधार पर उपचार तय किया जाता है।

दवा खोज और अनुसंधान में योगदान

दवा निर्माण एक लंबी और महंगी प्रक्रिया होती है, लेकिन एआई इस प्रक्रिया को तेज कर रहा है। एल्गोरिद्म लाखों रासायनिक संयोजनों का विश्लेषण कर संभावित दवाओं की पहचान कर सकते हैं। इससे नई दवाओं के विकास का समय और लागत दोनों कम हो रहे हैं। महामारी जैसे संकटों में एआई ने वैक्सीन विकास में भी अहम योगदान दिया।

शिक्षा और जागरूकता में भूमिका

एआई स्वास्थ्य शिक्षा को भी सुलभ बना रहा है। चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट मरीजों को प्राथमिक सलाह देने, अपॉइंटमेंट तय करने और स्वास्थ्य संबंधी जानकारी उपलब्ध कराने में मदद कर रहे हैं। इससे ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में भी स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ रही है।

सिनेमा और मनोरंजन में एआई का जादू

स्वास्थ्य के बाद एआई का प्रभाव सबसे अधिक सिनेमा और मनोरंजन उद्योग में देखा जा सकता है। आज फिल्म निर्माण में एआई का उपयोग स्क्रिप्ट लेखन, एडिटिंग, विजुअल इफेक्ट्स और यहां तक कि अभिनय में भी हो रहा है।

डीपफेक तकनीक के माध्यम से कलाकारों के चेहरे और आवाज़ को डिजिटल रूप से बदला जा सकता है। इससे दिवंगत कलाकारों को भी स्क्रीन पर पुनर्जीवित करने की संभावनाएं पैदा हुई हैं। हालांकि, यह तकनीक नैतिक और कानूनी चुनौतियां भी लेकर आती है।

कंटेंट निर्माण और दर्शकों का अनुभव

एआई दर्शकों की पसंद को समझकर उन्हें व्यक्तिगत सुझाव देता है। नेटफ्लिक्स और अमेजन जैसे प्लेटफॉर्म एआई एल्गोरिद्म के जरिए यह तय करते हैं कि दर्शकों को कौन-सा कंटेंट दिखाया जाए। इससे मनोरंजन का अनुभव अधिक व्यक्तिगत और आकर्षक बन गया है।

साथ ही, एआई आधारित एनिमेशन और वर्चुअल प्रोडक्शन तकनीकों ने फिल्म निर्माण को तेज, सस्ता और अधिक रचनात्मक बना दिया है। अब छोटे बजट की फिल्मों में भी बड़े स्तर के दृश्य प्रभाव संभव हो गए हैं।

चुनौतियां और नैतिक प्रश्न

एआई के बढ़ते उपयोग के साथ कई गंभीर प्रश्न भी उठते हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा एक बड़ी चिंता है। वहीं सिनेमा में डीपफेक और एआई जनित कंटेंट से फेक न्यूज और भ्रामक जानकारी फैलने का खतरा बढ़ता है।

इसके अलावा, एआई के कारण रोजगार पर भी प्रभाव पड़ रहा है। कई पारंपरिक नौकरियां खतरे में हैं, जबकि नई स्किल्स की मांग तेजी से बढ़ रही है।

भविष्य की दिशा

एआई का भविष्य अत्यंत संभावनाओं से भरा है। आने वाले समय में यह तकनीक और अधिक उन्नत होगी और जीवन के हर क्षेत्र में गहराई से समाहित हो जाएगी। स्वास्थ्य सेवाएं अधिक सुलभ और प्रभावी होंगी, वहीं मनोरंजन और भी अधिक इंटरैक्टिव और व्यक्तिगत बन जाएगा।

लेकिन इसके साथ ही यह जरूरी है कि एआई के उपयोग को संतुलित और जिम्मेदारीपूर्ण तरीके से अपनाया जाए। नैतिकता, पारदर्शिता और मानव मूल्यों को ध्यान में रखते हुए ही इसका विकास होना चाहिए।

निष्कर्ष

स्वास्थ्य से सिनेमा तक एआई का बढ़ता दायरा यह दर्शाता है कि तकनीक किस तरह मानव जीवन को नया आकार दे रही है। यह न केवल सुविधाओं को बढ़ा रही है, बल्कि सोचने और काम करने के तरीकों को भी बदल रही है। सही दिशा और संतुलन के साथ एआई मानवता के लिए एक शक्तिशाली वरदान साबित हो सकती है।

नीट-यूजी परीक्षा 2026 रद्द-3 मई 2026 को आयोजित पेपर लीक, परीक्षा माफिया और एनटीए की विश्वसनीयता पर सबसे बड़ा संकट -व्यापक समग्र विश्लेषण

- क़्या पब्लिक एग्जामिनेशंस (प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) एक्ट 2024 जिसे एंटी पेपर लीक कानून कहा जाने लगा निष्प्रभावी साबित हुआ ?

- नीट-यूजी 2026 सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा पेपर लीक के कारण रद्द- छात्र और अभिभावक सदमे में कि आखिर वास्तविक मास्टरमाइंड कानून से कैसे बार-बार खिलवाड़ करते हैं और बच जाते हैं ? -एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर भारत की शिक्षा व्यवस्था एक बारफिर ऐसे मोड़ पर खड़ी दिखाई दे रही है,जहां करोड़ों विद्यार्थियों का विश्वास,अभिभावकों की उम्मीदें और देश की प्रतिस्पर्धी परीक्षा प्रणाली की साख एक साथ कठघरे में खड़ी हो गई है। 3 मई 2026 को आयोजित नीट-यूजी 2026 परीक्षा को राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी यानी नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा रद्द किए जाने के फैसले ने पूरे देश में अभूतपूर्व हलचल पैदा कर दी है ।परीक्षा रद्द होने के पीछे कथित पेपर लीक,वायरल गेस पेपर, संगठित परीक्षा माफिया और प्रश्नपत्र के बड़े हिस्से के असली परीक्षा से मेल खाने के आरोपों ने शिक्षा जगत को झकझोर दिया है। केंद्र सरकार ने मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच सीबीआई को सौंप दी है,जबकि देश के अनेक शहरों में छात्र आंदोलन,प्रदर्शन और विरोध मार्च शुरू हो चुके हैं ।दिल्ली से लेकर पटना,जयपुर, लखनऊ,भोपाल और कोटा तक विद्यार्थियों में गुस्सा साफ दिखाई दे रहा है। लाखों छात्र यह सवाल पूछ रहे हैं कि आखिर उनकी वर्षों की मेहनत का मूल्य क्या है, यदि परीक्षा प्रणाली ही सुरक्षित नहीं रह गई है। यह केवल एक परीक्षा रद्द होने की घटना नहीं है, बल्कि भारत की पूरी प्रतिस्पर्धी परीक्षा व्यवस्था पर गहरा अविश्वास पैदा करने वाला राष्ट्रीय संकट बन चुका है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि नीट-यूजी 2026 विवाद ने एक बार फिर नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की कार्यप्रणाली पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगा दिए हैं ।पिछले लगभग पांच वर्षों में अनेक राष्ट्रीय परीक्षाओं को लेकर लगातार विवाद सामने आते रहे हैं। कभी पेपर लीक के आरोप लगे, कभी तकनीकी गड़बड़ियां हुईं,कभी परीक्षा केंद्रों की अव्यवस्था पर सवाल उठे और कभी परिणामों की पारदर्शिता पर बहस छिड़ी। नीट, यूजीसी नेट, जेईई और कई भर्ती परीक्षाओं में समय-समय पर सामने आए विवादों ने यह धारणा मजबूत की है कि देश की सबसे महत्वपूर्ण परीक्षाओं की सुरक्षा व्यवस्था में कहीं न कहीं गंभीर खामियां मौजूद हैं। इस बार स्थिति इसलिए और अधिक विस्फोटक हो गई क्योंकि परीक्षा से ठीक पहले सोशल मीडिया, टेलीग्राम चैनलों और कुछ निजी नेटवर्कों पर एक कथित गेस पेपर वायरल हुआ था। बाद में जांच एजेंसियों द्वारा यह दावा सामने आया कि वायरल सामग्री के लगभग 120 से 125 प्रश्न वास्तविक प्रश्नपत्र से हूबहू मेल खाते थे। यदि यह दावा पूरी तरह सही साबित होता है, तो यह केवल लीक नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर संगठित परीक्षा अपराध का उदाहरण माना जाएगा।

साथियों बात अगर हम साल 2018 में स्थापित नेशनल टेस्टिंग एजेंसी का उद्देश्य को समझने की करें तो देश में प्रवेश परीक्षाओं को अधिक पारदर्शी,आधुनिक और निष्पक्ष बनाना था। एजेंसी को तकनीक आधारित परीक्षा प्रणाली, डिजिटल निगरानी और केंद्रीकृत प्रबंधन के जरिए शिक्षा क्षेत्र में सुधार का बड़ा मॉडल माना गया था। शिक्षा मंत्रालय के अनुसार एनटीए ने स्थापना के बाद 240 से अधिक परीक्षाओं का आयोजन किया, जिनमें 5.4 करोड़ से ज्यादा छात्र शामिल हुए ।लेकिन उपलब्धियों के साथ-साथ विवादों की सूची भी लगातार बढ़ती गई। संसद में वर्ष 2024 में दिए गए सरकारी जवाब में यह स्वीकार किया गया था कि एनटीए को अब तक कम से कम 16 परीक्षाओं को स्थगित करना पड़ा। यह संख्या केवल प्रशासनिक चुनौतियों का संकेत नहीं देती, बल्कि यह बताती है कि भारत जैसी विशाल आबादी वाले देश में परीक्षा प्रबंधन कितनी जटिल और संवेदनशील प्रक्रिया बन चुका है।

साथियों बात अगर हम नीट- यूजी से जुड़ा विवाद इसको समझने की करें तो यह नया नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में कई बार इस परीक्षा कीविश्वसनीयता पर सवाल उठे हैं। 2024 में भी नीट परीक्षा को लेकर बड़ा विवाद खड़ा हुआ था, जब परिणामों में असामान्य अंक, ग्रेस मार्क्स, परीक्षा केंद्रों की अनियमितताएं और पेपर लीक के आरोपों ने राष्ट्रीय बहस का रूप ले लिया था। उस समय

मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा और केंद्र सरकार को व्यापक सफाई देनी पड़ी। हालांकि परीक्षा पूरी तरह रद्द नहीं हुई थी, लेकिन पूरे घटनाक्रम ने परीक्षा प्रणाली की निष्पक्षता को लेकर गंभीर चिंता पैदा कर दी थी। उसी वर्ष यूजीसी नेट 2024 परीक्षा को पेपर लीक की आशंकाओं के चलते रद्द करना पड़ा था। इससे पहले भी राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में कई भर्ती परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक होने की घटनाएं सामने आ चुकी थीं। कई राज्यों में संगठित गिरोह करोड़ों रुपये लेकर उम्मीदवारों तक प्रश्नपत्र पहुंचाने, सॉल्वर बैठाने और डिजिटल माध्यमों से परीक्षा में धोखाधड़ी कराने के आरोपों में पकड़े गए।

साथियों बात अगर हम पेपर लीक रोकने के लिए अधिनियम की करें तो लगातार बढ़ते विवादों और राष्ट्रीय स्तरपर हो रही आलोचना के बाद केंद्र सरकार ने 2024 में पब्लिक एग्जामिनेशंस (प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) एक्ट लागू किया,जिसे आम बोलचाल में एंटी पेपर लीक कानून कहा जाने लगा। संसद ने फरवरी 2024 में इस कानून को पारित किया और 21 जून 2024 से इसे पूरे देश में लागू कर दिया गया। सरकार का तर्क था कि संगठित परीक्षा अपराध अब इतना बड़ा नेटवर्क बन चुका है कि केवल राज्य स्तरीय कानूनों से इससे निपटना संभव नहीं है। इसीलिए राष्ट्रीय स्तर पर कठोर कानूनी ढांचा आवश्यक था ।लेकिन अब सटीक विडंबना यह है कि इतने सख्त कानून के लागू होने के बावजूद नीट-यूजी 2026 जैसी देश की सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा को पेपर लीक के आरोपों के कारण रद्द करना पड़ा। इससे छात्रों और अभिभावकों के मन में सबसे बड़ा प्रश्न यही उठ रहा है कि आखिर वास्तविक मास्टरमाइंड कौन हैं और वे कानून से बच कैसे जाते हैं ।एंटी पेपर लीक कानून के प्रावधान अत्यंत कठोर माने जाते हैं। इस कानून के तहत पेपर लीक, फर्जी परीक्षा संचालन, डिजिटल हैकिंग, सॉल्वर गैंग चलाना या उम्मीदवार की जगह किसी अन्य व्यक्ति को परीक्षा दिलाना गैर-जमानती अपराध घोषित किया गया है। संगठित पेपर लीक गिरोह चलाने वालों को 5 से 10 वर्ष तक की जेल की सजा हो सकती है। इसके अतिरिक्त 1 करोड़ रुपये तक जुर्माने का प्रावधान भी रखा गया है। यदि किसी परीक्षा केंद्र, आईटी कंपनी, प्रिंटिंग एजेंसी या अन्य सेवा प्रदाता की मिलीभगत सामने आती है, तो उन्हें ब्लैकलिस्ट किया जा सकता है और उनकी संपत्तियां भी जब्त की जा सकती हैं। कानून केंद्र सरकार को यह अधिकार भी देता है कि गंभीर मामलों की जांच सीबीआई जैसी एजेंसियों को सौंपी जा सके और विशेष अदालतों के माध्यम से तेज सुनवाई कराई जा सके। पहली नजर में यह कानून बेहद कठोर और व्यापक दिखाई देता है,लेकिनवास्तविक चुनौती कानून बनाने से अधिक उसके प्रभावी क्रियान्वयन की है।

साथियों बात अगर हम विशेषज्ञों के राय को समझने की करें तो वे मानते हैं कि भारत में पेपर लीक अब केवल स्थानीय अपराध नहीं रह गया है, बल्कि यह संगठित आर्थिक उद्योग का रूप ले चुका है। इसमें शिक्षा माफिया कोचिंग नेटवर्क, तकनीकी विशेषज्ञ,साइबर अपराधी,प्रिंटिंग चैन से जुड़े लोग और कुछ भ्रष्ट प्रशासनिक तत्वों की संभावित मिलीभगत होती है। यही कारण है कि कई मामलों में जांच एजेंसियां छोटे स्तर के एजेंटों तक तो पहुंच जाती हैं, लेकिन वास्तविक मास्टरमाइंड तक पहुंचना बेहद कठिन साबित होता है। परीक्षा प्रक्रिया में प्रश्नपत्र तैयार करने से लेकर उसकी प्रिंटिंग,पैकेजिंग ट्रांसपोर्टेशन,डिजिटलट्रांसमिशन और परीक्षा केंद्रों तक वितरण की लंबी श्रृंखला होती है। यदि किसी एक स्तर पर भी सुरक्षा चूक हो जाए,तो पूरी परीक्षा खतरे में पड़ सकती है।

साथियों बात अगर हम डिजिटल योग की करें तो डिजिटल तकनीक ने जहां परीक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाया है, वहीं अपराधियों को भी नए हथियार दे दिए हैं। पहले पेपर लीक मुख्यतः फोटोकॉपी या भौतिक दस्तावेजों तक सीमित रहता था,लेकिन अब एनक्रिप्टेड मैसेजिंग एप टेलीग्राम चैनल, क्लाउड स्टोरेज और डार्क वेब जैसे माध्यमों का उपयोग बढ़ गया है। साइबर अपराधी मिनटों में हजारों लोगों तक प्रश्नपत्र पहुंचा सकते हैं। जांच एजेंसियों के लिए यह पता लगाना कठिन हो जाता है कि मूल स्रोत कहां था और जानकारी किस चैनल से फैली। कई बार गेस पेपर के नाम पर प्रश्नपत्र प्रसारित किए जाते हैं, जिससे कानूनी जांच और अधिक जटिल हो जाती है क्योंकि आरोपी यह तर्क देते हैं कि वह केवल संभावित प्रश्नों का संकलन था। लेकिन यदि बड़ी संख्या में प्रश्न वास्तविक परीक्षा से मेल खा जाएं, तो संदेह स्वतः गहरा जाता है ।नीट-यूजी 2026 मामले में भी यही हुआ। परीक्षा से पहले कुछ ऑनलाइन समूहों में वायरल सामग्री को पहले सामान्य "गेस पेपर" माना गया, लेकिन बाद में जांच में कथित रूप से यह सामने आया कि 120 से अधिक प्रश्न वास्तविक पेपर से मेल खाते थे। यही वह बिंदु था, जिसने पूरे मामले को राष्ट्रीय संकट में बदल दिया। लाखों विद्यार्थियों ने आरोप लगाया कि कुछ उम्मीदवारों को परीक्षा से पहले अनुचित लाभ मिला। सोशल मीडिया पर कई छात्रों ने अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि वर्षों की मेहनत और मानसिक तनाव के बाद यदि परीक्षा की निष्पक्षता ही समाप्त हो जाए, तो मेहनती छात्रों का भविष्य ग्रुप से असुरक्षित हो जाता है।

साथियों बात अगर हम इस पूरे विवाद का सबसे बड़ासामाजिक प्रभाव छात्रों की मानसिक स्थिति पर पड़ा है इसको समझने की करें तो,नीट जैसी परीक्षा केवल एक टेस्ट नहीं होती, बल्कि लाखों परिवारों के सपनों, आर्थिक निवेश और भावनात्मक संघर्ष से जुड़ी होती है। अनेक छात्र वर्षों तक कोचिंग लेते हैं, परिवार अपनी बचत खर्च करते हैं और छात्र अत्यधिक मानसिक दबाव के बीच तैयारी करते हैं। परीक्षा रद्द होने का अर्थ केवल पुनर्परीक्षा नहीं होता,बल्कि यह छात्रों के आत्मविश्वास, मानसिक स्वास्थ्य और भविष्य की योजनाओं पर गहरा आघात होता है। कई छात्र पहले ही लंबे समय तक प्रतियोगी परीक्षाओं के तनाव से गुजरते हैं। ऐसे में पेपर लीक और परीक्षा रद्द होने की घटनाएं उनके भीतर व्यवस्था के प्रति भयंकर अविश्वास पैदा करती हैं।

साथियों बात अगर हम राजनीतिक स्तरपर भी यह मुद्दा तेजी से उभर रहा है। इसको समझने की करें तो विपक्षी दल केंद्र सरकार और नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की जवाबदेही पर सवाल उठा रहे हैं। दूसरी ओर सरकार का कहना है कि कठोर कार्रवाई की जा रही है और दोषियों को छोड़ा नहीं जाएगा। लेकिन जनमानस में यह धारणा मजबूत हो रही है कि हर बार परीक्षा रद्द होने के बाद केवल जांच और गिरफ्तारियों की खबरें आती हैं, जबकि कुछ समय बाद मामला धीमा पड़ जाता है। यही कारण है कि विशेषज्ञ लगातार फास्ट ट्रैक न्याय की आवश्यकता पर जोर दे रहे हैं। उनका मानना है कि जब तक दोषियों को त्वरित और सार्वजनिक सजा नहीं मिलेगी, तब तक परीक्षा माफिया का मनोबल नहीं टूटेगा।

साथियों बात अगर हम भारत में प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव भी इस समस्या की जड़ में मौजूद है इसको समझने की करें तो, नीट परीक्षा में हर वर्ष लाखों छात्र कुछ हजार मेडिकल सीटों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। सीमित अवसर और अत्यधिक प्रतिस्पर्धा परीक्षा माफिया के लिए बड़ा बाजार तैयार करते हैं। करोड़ों रुपये लेकर प्रश्नपत्र उपलब्ध कराने,सॉल्वर बैठाने और फर्जी उम्मीदवारों के माध्यम से सीट दिलाने का अवैध कारोबार इसी दबाव से फलता-फूलता है। जब सफलता और असफलता के बीच केवल कुछ अंक का अंतर हो, तब कुछ लोग अनुचित रास्ते अपनाने के लिए तैयार हो जाते हैं। यही वह सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति है, जिसने पेपर लीक उद्योग को बढ़ावा दिया है ।विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि केवल कठोर कानून पर्याप्त नहीं हैं। परीक्षा प्रणाली में तकनीकी और प्रशासनिक सुधारों की भी अत्यंत आवश्यकता है। प्रश्नपत्र निर्माण और वितरण प्रणाली को अधिक विकेंद्रीकृत तथा एनक्रिप्टेड बनाना होगा। परीक्षा केंद्रों की निगरानी के लिए रियल टाइम डिजिटल ट्रैकिंग, बायोमेट्रिक सत्यापन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित निगरानी तंत्र का उपयोग बढ़ाना होगा। साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों को परीक्षा प्रबंधन का स्थायी हिस्सा बनाना आवश्यक है। साथ ही प्रिंटिंग और लॉजिस्टिक चैन से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति की जवाबदेही स्पष्ट करनी होगी ।इस पूरे विवाद ने एक और महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा किया है क्या भारत की परीक्षा प्रणाली अत्यधिक केंद्रीकृत हो चुकी है ? जब करोड़ों छात्रों की परीक्षा एक ही एजेंसी के माध्यम से आयोजित होती है, तब किसी एक स्तर की विफलता का प्रभाव पूरे देश पर पड़ता है। कुछ विशेषज्ञ सुझाव दे रहे हैं कि परीक्षा प्रक्रिया को अधिक बहुस्तरीय और क्षेत्रीय रूप से सुरक्षित बनाया जाना चाहिए ताकि किसी एक बिंदु पर हुई चूक राष्ट्रीय संकट में न बदल जाए।

अतः अगर हम अपरूप पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि नीट-यूजी 2026 परीक्षा रद्द होने की घटना केवल एक प्रशासनिक असफलता नहीं है, बल्कि यह उस विश्वास संकट का प्रतीक है जो धीरे-धीरे भारत की प्रतिस्पर्धी परीक्षा प्रणाली को घेर रहा है ।यदि देश की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षाओं की निष्पक्षता पर लगातार प्रश्न उठते रहेंगे, तो इसका असर केवल शिक्षा तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि यह सामाजिक न्याय, अवसर की समानता और युवाओं के भविष्य पर भी पड़ेगा। करोड़ों छात्र यह महसूस करने लगेंगे कि मेहनत से अधिक प्रभावशाली नेटवर्क और अवैध साधन निर्णायक बनते जा रहे हैं। यह स्थिति किसी भी लोकतांत्रिक समाज के लिए अत्यंत खतरनाक है। आज सटीक आवश्यकता केवल दोषियों की गिरफ्तारी की नहीं, बल्कि पूरे परीक्षा ढांचे के पुनर्मूल्यांकन की है। सरकार, जांच एजेंसियों, शिक्षा विशेषज्ञों, साइबर सुरक्षा संस्थानों और समाज को मिलकर ऐसी व्यवस्था बनानी होगी, जहां परीक्षा केवल ज्ञान और योग्यता की प्रतिस्पर्धा बने, अपराध और माफिया नेटवर्क का मैदान नहीं। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो हर नई परीक्षा के साथ छात्रों के मन में एक ही प्रश्न उठेगा क्या इस बार भी पेपर लीक होगा ? जो रेखांकित करना बहुत जरूरी है

कौन जवाब देगा नीट की इस लगातार बिगड़ती व्यवस्था का ?

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

कड़े नियमों, डिजिटल निगरानी और सुधार के दावों के बावजूद जब परीक्षा व्यवस्था बार-बार संदेह में आ जाए, तो नीट-यूजी 2026 जैसी घटनाएँ पूरे सिस्टम की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े कर देती हैं। 3 मई को देशभर के 22 लाख से अधिक अभ्यर्थियों ने डॉक्टर बनने के सपने के साथ परीक्षा दी, लेकिन कुछ ही दिनों में यह विवादों में घिर गई। 12 मई को एनटीए द्वारा परीक्षा रद्द करने और मामले की जांच सीबीआई को सौंपने के फैसले ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया। राजस्थान एसओजी की प्रारंभिक जांच में "गेस पेपर" और प्रश्नों के मेल ने परीक्षा की पारदर्शिता और निष्पक्षता पर गंभीर चोट पहुँचाई। यह केवल परीक्षा रद्द होने की घटना नहीं, बल्कि पूरे परीक्षा तंत्र की गहरी संरचनात्मक विफलताओं का स्पष्ट संकेत बन गई।

जब लाखों विद्यार्थी किसी परीक्षा के लिए अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष समर्पित करते हैं, तो उनका पूरा भविष्य उसी एक दिन से जुड़ जाता है। नीट अभ्यर्थियों ने कोचिंग, टेस्ट सीरीज, निरंतर अभ्यास और मानसिक दबाव के बीच कठिन संघर्ष किया, लेकिन परीक्षा रद्द होने के फैसले ने उनकी मेहनत को अनिश्चितता में धकेल दिया। ग्रामीण और छोटे शहरों के छात्रों पर भी इसका गहरा असर पड़ा, जो सीमित संसाधनों में भी बड़े सपने लेकर आगे बढ़ रहे थे। उनके लिए यह परीक्षा केवल प्रवेश नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक उन्नति का अवसर थी, जो फिर से अधर में लटक गया।

जब किसी बच्चे के सपने को साकार करने के लिए परिवार अपनी पूरी जमा-पूंजी, कर्ज और संसाधन तक दाँव पर लगा देता है, तब ऐसा निर्णय उन्हें आर्थिक ही नहीं, गहरे मानसिक आघात से भी जकड़ देता है। मध्यमवर्गीय माता-पिता ने कोचिंग, हॉस्टल, किताबों और तैयारी पर अपनी सीमाओं से बाहर जाकर खर्च किया था। परीक्षा रद्द होने से यह निवेश अब सिर्फ आर्थिक नुकसान नहीं, बल्कि भावनात्मक टूटन में बदल गया है। कई घरों में तनाव और चिंता बढ़ गई है। माता-पिता के मन में अब यही सवाल गूंज रहा है कि क्या हर साल उनके बच्चों का भविष्य इसी तरह अनिश्चितता के अंधेरे में फँसा रहेगा ?

मल्टी-लेयर सुरक्षा, डिजिटल निगरानी, फ्लाइंग स्क्वाड और सीलबंद प्रोटोकॉल जैसी मजबूत व्यवस्थाओं के बावजूद जब बार-बार पेपर लीक और प्रश्नों के मिलान जैसी घटनाएँ सामने आती हैं, तो यह परीक्षा प्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े करती हैं। राजस्थान के सीकर जैसे कोचिंग केंद्र में उजागर हुआ "गेस पेपर" का मामला यह दिखाता है कि समस्या केवल परीक्षा केंद्र तक सीमित नहीं, बल्कि पूरी प्रक्रिया की श्रृंखला में कहीं गहराई तक फैली हो सकती है। प्रश्नपत्र निर्माण से लेकर भंडारण, परिवहन और वितरण तक हर चरण में यदि थोड़ी भी चूक रह जाए, तो पूरी परीक्षा की विश्वसनीयता पर सीधा असर पड़ता है।

गलती सामने आने पर हर बार परीक्षा रद्द करना समाधान नहीं, बल्कि उसका सीधा बोझ छात्रों पर डाल देना बन जाता है, जबकि वास्तविक चूक करने वाली व्यवस्था अक्सर जवाबदेही से बच जाती है। यही सबसे बड़ा असंतुलन है। सिस्टम की खामियों को सुधारने के बजाय उसकी कीमत अभ्यर्थियों को समय, श्रम और मानसिक दबाव के रूप में चुकानी पड़ती है। यह सिलसिला बार-बार दोहराया जाता है, लेकिन जवाबदेही का स्पष्ट ढांचा आज भी कमजोर प्रतीत होता है। ऐसे में सवाल और भी तीखा हो जाता है कि जब सुरक्षा के इतने स्तर मौजूद हैं, तो आखिर चूक किस चरण में और किसकी लापरवाही से हो रही है ?

एनटीए द्वारा यह कहना कि छात्रों को दोबारा आवेदन नहीं करना होगा और फीस वापस कर दी जाएगी, केवल एक औपचारिक प्रशासनिक घोषणा प्रतीत होती है, जबकि मूल संकट जस का तस बना हुआ है। नई परीक्षा तिथि को लेकर बनी अनिश्चितता ने पूरे मेडिकल प्रवेश कैलेंडर को अस्त-व्यस्त कर दिया है। एमबीबीएस व अन्य मेडिकल पाठ्यक्रमों के सत्र में संभावित देरी का प्रभाव किसी एक बैच तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरी चिकित्सा शिक्षा व्यवस्था पर पड़ेगा। हर टलती तारीख का अर्थ छात्रों के जीवन में समय, अवसर और भविष्य का लगातार पीछे खिसकना है।

जब किसी एक परीक्षा पर उठे सवाल पूरे चिकित्सा शिक्षा ढांचे की साख को हिला दें, तो यह केवल शैक्षणिक मुद्दा नहीं, बल्कि सिस्टम की गहरी विफलता बन जाता है। एआईआईएमएस, जेआईपीएमईआर जैसे शीर्ष संस्थानों में प्रवेश नीट पर निर्भर है, और उसी परीक्षा की पारदर्शिता संदिग्ध हो जाए, तो पूरा मेडिकल भविष्य अस्थिर हो जाता है। छात्रों का असंतोष अब केवल भावनात्मक नहीं रहा, बल्कि एक संगठित और निर्णायक मांग में बदल चुका है—कड़ी सुरक्षा, वास्तविक डिजिटल पारदर्शिता और स्वतंत्र निगरानी व्यवस्था की।

सीबीआई जांच की घोषणा ने भले ही उम्मीद जगाई हो कि दोषियों तक पहुंच संभव होगी, लेकिन केवल जांच अपने आप में समस्या का समाधान नहीं बन सकती। असली आवश्यकता गहरे प्रणालीगत सुधारों की है—जो केवल तकनीक तक सीमित न होकर प्रशासनिक ढांचे और संरचना दोनों को मजबूत करें। यदि स्पष्ट और कठोर जवाबदेही तय नहीं की गई, तो ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकना कठिन होगा। परीक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता, नियमित निगरानी और सख्त ऑडिट प्रणाली अब कोई विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है।

जब एक ही परीक्षा 22 लाख से अधिक छात्रों के भविष्य का निर्णायक आधार बन जाए और वही बार-बार विवादों के घेरे में फँसती रहे, तो यह केवल शैक्षणिक असफलता नहीं बल्कि राष्ट्रीय प्रतिभा के क्षरण का गंभीर संकेत है। हर बार छात्रों का समय, परिश्रम और मानसिक ऊर्जा दांव पर लगती है, जबकि व्यवस्था में अपेक्षित सुधार दिखाई नहीं देता। यह स्थिति अब सामान्य चिंता नहीं, बल्कि स्पष्ट चेतावनी बन चुकी है कि यदि तुरंत ठोस और निर्णायक कदम नहीं उठाए गए, तो व्यवस्था पर से भरोसा पूरी तरह टूट सकता है।

बार-बार सामने आने वाली यह स्थिति अब एक गंभीर प्रश्न बन चुकी है कि क्या छात्र हमेशा परीक्षा की अनिश्चितता, रद्दीकरण और दोबारा तैयारी के बोझ में ही उलझे रहेंगे। इसका उत्तर किसी जांच या औपचारिक आश्वासन से नहीं निकल सकता। जरूरत ऐसी मजबूत और जवाबदेह व्यवस्था की है जहाँ त्रुटियों की संभावना कम हो और हर स्तर पर जिम्मेदारी स्पष्ट हो। तभी लाखों छात्रों के सपनों को व्यवस्था की चूक से बचाया जा सकेगा और उनका भविष्य सुरक्षित, पारदर्शी तथा स्थिर दिशा में आगे बढ़ सकेगा—वरना भरोसे का यह संकट और गहरा होगा और सबसे बड़ी कीमत प्रतिभा को चुकानी पड़ेगी।

गेस पेपर वाले "गुरुजी" का चमत्कार

जब मेहनत हारने लगे और लीक संस्कृति जीतने लगे

डॉ. प्रियंका सौरभ"

देश में इन दिनों नीट परीक्षा को लेकर ऐसा माहौल बना हुआ है मानो कोई रहस्य-रोमांच से भरी वेब सीरीज़ रिलीज़ हुई हो। हर दिन नया खुलासा, नया किरदार और नई कहानी सामने आ रही है। कोई कह रहा है कि प्रश्नपत्र पहले से घूम रहा था, कोई दावा कर रहा है कि "गेस पेपर" में वही प्रश्न थे जो असली परीक्षा में आए। केवल प्रश्न ही नहीं, विकल्पों का क्रम, भाषा, यहाँ तक कि कॉमा और फुलस्टॉप तक समान बताए जा रहे हैं। अब विद्यार्थी और अभिभावक यही सोच रहे हैं कि यह "गेस" था या किसी अलौकिक शक्ति का चमत्कार ?

यदि यह सब सच है, तो देश की जनता उन "गुरुजी" के दर्शन अवश्य करना चाहती है जिन्होंने यह करिश्मा किया। वर्षों से कोटा और सीकर के बड़े-बड़े कोचिंग संस्थान अरबों रुपये के ढाँचे खड़े करके सफलता का दावा करते रहे। हजारों शिक्षक दिन-रात पढ़ाते रहे। विद्यार्थी अपनी नींद, बचपन और मानसिक शांति तक दाँव पर लगाकर तैयारी करते रहे। लेकिन जो काम लाखों की फीस और वर्षों की मेहनत नहीं कर सकी, वह एक "गेस पेपर" ने कर दिखाया। यह शिक्षा व्यवस्था पर सबसे तीखा व्यंग्य है।

बताया जा रहा है कि जीव विज्ञान के 90 में से 90 प्रश्न और रसायन विज्ञान के 45 के 45 प्रश्न मेल खा गए। यदि ऐसा है, तो यह महज़ संयोग नहीं हो सकता। यह उन लाखों छात्रों की मेहनत का अपमान है जो ईमानदारी से पढ़ाई करते हैं। यह उस किसान पिता के संघर्ष का मज़ाक है जो खेत बेचकर बच्चे की फीस भरता है। यह उस माँ की उम्मीदों पर चोट है जो अपने सपनों को त्यागकर बच्चे के भविष्य के लिए जीती है।

नीट जैसी परीक्षा केवल एक एग्जाम नहीं होती, यह करोड़ों सपनों का दरवाज़ा होती है। यहाँ एक अंक जीवन की दिशा बदल देता है। ऐसे में यदि प्रश्नपत्र लीक होने या पहले से उपलब्ध होने की आशंका पैदा हो जाए, तो सबसे पहले भरोसा टूटता है। और जब शिक्षा व्यवस्था से भरोसा खत्म होने लगे, तब केवल परीक्षा नहीं, पूरा समाज संकट में आ जाता है।

सबसे दिलचस्प बात यह है कि मामला परीक्षा वाले दिन ही पुलिस तक पहुँच गया था। कुछ लोगों को उठाया भी गया, लेकिन अब तक एफ़आईआर तक दर्ज नहीं हुई। यह चुप्पी अपने आप में सवाल है। क्या प्रभावशाली लोग घेरे में हैं ? क्या शिक्षा अब इतना बड़ा कारोबार बन चुकी है कि सच

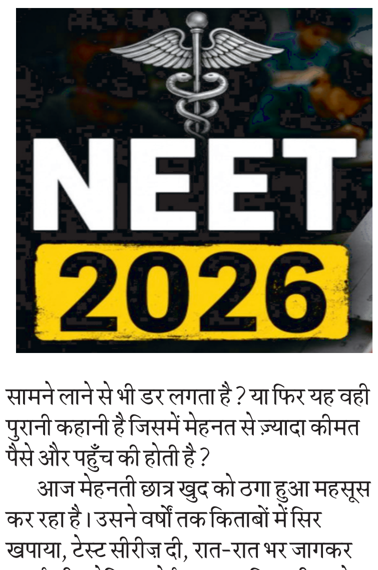

सामने लाने से भी डर लगता है ? या फिर यह वही पुरानी कहानी है जिसमें मेहनत से ज़्यादा कीमत पैसे और पहुँच की होती है ?

आज मेहनती छात्र खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहा है। उसने वर्षों तक किताबों में सिर खपाया, टेस्ट सीरीज़ दी, रात-रात भर जागकर पढ़ाई की। लेकिन कोई दूसरा व्यक्ति परीक्षा से पहले ही प्रश्नपत्र का "दर्शन" कर गया। ऐसे में मेहनत का मूल्य क्या रह जाता है ? छात्र के मन में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि गलती उसकी थी या उसकी ईमानदारी की ?

यह केवल परीक्षा में चीटिंग नहीं, बल्कि समाज की नैतिकता पर हमला है। जब युवाओं को यह दिखाई देने लगे कि सफलता का रास्ता परिश्रम नहीं बल्कि जुगाड़, नेटवर्क और लीक है, तब पूरी पीढ़ी का विश्वास टूटने लगता है। फिर किताबों से ज़्यादा भरोसा "व्हाट्सऐप यूनिवर्सिटी" पर होने लगता है।

सीकर और कोटा जैसे शहर आज शिक्षा से ज़्यादा "सेलेक्शन उद्योग" के प्रतीक बन चुके हैं। हर गली में कोचिंग संस्थान, हर मोड़ पर रैंक और रिज़ल्ट के होर्डिंग, हर दीवार पर "100% चयन" का दावा। ऐसा लगता है मानो हर मकान मालिक सुबह उठकर पहले "आईआईटी-नीट अकादमी" का बोर्ड लगाता है, फिर चाय पीता है। विद्यार्थी गाँवों से सपने लेकर आते हैं और माता-पिता कर्ज लेकर फीस भरते हैं। लेकिन अब इस पूरी व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न खड़ा हो गया है।

यदि प्रश्नपत्र पहले से घूम रहा था, तो यह पूरा तंत्र कितना ईमानदार है ? क्या यह वास्तव में शिक्षा का केंद्र है या फिर सपनों का बाजार ? यहाँ विद्यार्थी कम और "रिज़ल्ट प्रोडक्ट" ज़्यादा दिखाई देने लगे हैं। बड़े-बड़े होर्डिंग्स पर छात्रों से ज़्यादा फोटो संस्थान के मालिकों की होती है, जबकि असली संघर्ष तो उस बच्चे का होता है जो कमरे में बंद होकर दिन-रात पढ़ता है।

सबसे दुखद स्थिति मध्यमवर्गीय और ग्रामीण परिवारों की है। माता-पिता अपनी जमा-पूँजी, खेत, गहने तक बेच देते हैं ताकि बच्चा डॉक्टर बन सके। बच्चे सामाजिक जीवन से कटकर केवल पढ़ाई में लगे रहते हैं। लेकिन जब उन्हें पता चलता है कि किसी "गुरुजी" ने प्रश्नपत्र पहले ही बता दिया था, तो उनके भीतर व्यवस्था के प्रति गहरा अविश्वास पैदा होता है।

आज व्यंग्य में लोग पूछ रहे हैं कि अगली बार किताबें खरीदें या सीधे "लीक विशेषज्ञों" से संपर्क करें ? यह मज़ाक नहीं, हमारी शिक्षा व्यवस्था पर सबसे गंभीर आरोप है। यदि मेहनत और ईमानदारी हारने लगें, तो फिर समाज प्रतिभा का सम्मान करना भी छोड़ देता है।

हर बार सरकारें जाँच का आश्वासन देती हैं। कुछ गिरफ्तारियाँ होती हैं, प्रेस कॉन्फ्रेंस होती हैं, और फिर धीरे-धीरे मामला ठंडा पड़ जाता है। लेकिन जिस छात्र का एक साल बर्बाद होता है, उसके लिए यह केवल खबर नहीं, जीवन का संकट होता है। मानसिक दबाव, आर्थिक नुकसान और टूटे सपने किसी आँकड़े में दर्ज नहीं होते।

अब ज़रूरत केवल दोषियों को पकड़ने की नहीं, बल्कि पूरी परीक्षा प्रणाली को पारदर्शी और सुरक्षित बनाने की है। प्रश्नपत्र निर्माण से लेकर वितरण तक हर स्तर पर जवाबदेही तय करनी होगी। परीक्षा माफिया और प्रभावशाली नेटवर्क पर कठोर कार्रवाई करनी होगी। वरना हर साल यही कहानी दोहराई जाएगी और हर बार लाखों नए छात्र व्यवस्था पर से भरोसा खो देंगे।

फिलहाल जनता की सबसे बड़ी जिज्ञासा यही है कि आखिर वे "गुरुजी" कौन हैं ? वे कौन से सिद्ध पुरुष हैं जिनकी भविष्यवाणी कॉमा-फुलस्टॉप तक सच हो जाती है ? क्या उन्होंने कोई तपस्या की थी, या फिर यह "ज्ञान" किसी और रास्ते से आया था ? क्योंकि यदि गेस पेपर इतने ही सटीक होने लगे, तो शायद देश के विश्वविद्यालयों से ज़्यादा भीड़ "गुरुजी संस्थान" में दिखाई देगी।

व्यंग्य अपनी जगह है, लेकिन सच्चाई बेहद गंभीर है। यह केवल एक परीक्षा का संकट नहीं, बल्कि भरोसे का संकट है। और जिस दिन मेहनती युवा यह मान ले कि सफलता का रास्ता ज्ञान नहीं, जुगाड़ है—उस दिन समाज की नींव कमजोर होने लगती है। इसलिए अब समय केवल चर्चा का नहीं, निर्णायक सुधार का है। वरना आने वाली पीढ़ियाँ किताबों में नहीं, लीक हुए प्रश्नपत्रों में भविष्य तलाशेंगी।

247 लीटर अवैध महुआ शराब जब्त, 12 गिरफ्तार

लंबे समय बाद राउरकेला आबकारी विभाग की बड़ी कार्रवाई

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला : राउरकेला आबकारी विभाग ने लंबे समय बाद अवैध शराब कारोबार के खिलाफ सख्त कार्रवाई शुरू की है। विभाग की ओर से बुधवार को विभिन्न क्षेत्रों में छापेमारी कर 12 लोगों को गिरफ्तार किया गया। आरोपियों के पास से 203 लीटर अवैध महुआ शराब तथा अन्य जिलों से तस्करी कर लाई गई 43 लीटर देसी शराब जब्त की गई है।

गिरफ्तार आरोपियों में मागदाली किसपट्टा, रुक्मणी बारला, सुशीला कुम्भार, कमला कुम्भार, एस. कुम्भार, अजय ओराम, पाहाना ओराम, पुष्पा तिर्की, मिनी समासी, रंगबती कुम्भार, शर्मिला ओराम और चुमनी ओराम शामिल हैं। जानकारों के अनुसार मोहरों की गिरफ्तारी हुई है आका बेधड़क बाजार में विचरण कर रहे हैं1

देसी शराब बेचते पकड़े गए आरोपी जानकारी के अनुसार, आबकारी अधीक्षक के निर्देश पर चिकटमाटी, बिरड़ा, जोड़ाबंध और भालुलता क्षेत्र में अचानक छापेमारी अभियान चलाया गया। इस दौरान कई आरोपी अलग-अलग स्थानों पर अवैध महुआ शराब तैयार करते पाए गए, जिन्हें आबकारी पुलिस ने मौके से गिरफ्तार कर लिया। जांच में यह भी सामने आया कि कुछ आरोपी पड़ोसी जिलों की भट्टियों से अवैध रूप से देसी शराब लाकर इलाके में बिक्री कर रहे थे। इसके बाद पुलिस ने उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया। इस छापे में राजगांगपुर व झारखण्ड से लाकर स्टॉक किये जा रहे गोदामों पर मेहरबानी बनी रही1 तिलकानगर में रहने वाले एक शराब माफिया पर विभागीय मेहरबानी बरकरार है, देखने वाली बात है कि राजगंगपुर, सिमडेगा व सुंदरगढ़ के शराब माफियाओं के अवैध स्टॉक पर छापा कब1

इस अभियान में आबकारी इंस्पेक्टर मोहन प्रधान, इंस्पेक्टर हेमंत महानंदिया, एएसआई विनोदिनी बेहेरा, विघूत भूषण दास, आलोक प्रधान, युवराज बाग सहित हेम मंजरी बिश्वाल, गोवर्धन बिशी, आयेशा मिंज, त्रिलोचन पाढ़ी, आकाश पटेल, नवीन भूयां, प्रदीप लुगुन, बबुल स्वाईं, लक्ष्मीनारायण पाणिग्राही, विक्टोरिया डुंगडुंग, टेरेसा बारला, लिलिमा भोई, सूर्यकांत स्वाईं और निरंजन राउत समेत कई अधिकारी और कर्मचारी शामिल रहे1

रवि मीणा ने राउरकेला के नए डीएफओ के रूप में संभाला कार्यभार

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला, 13 मई : रवि मीणा ने मंगलवार को राउरकेला के नए डिविजनल फॉरेस्ट ऑफिसर (डीएफओ) के रूप में आधिकारिक तौर पर कार्यभार संभाल लिया। उन्होंने निवर्तमान डीएफओ यशोबंत सेठी का स्थान लिया। कार्यभार ग्रहण समारोह वन विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

कार्यभार संभालने के बाद नए डीएफओ रवि मीणा ने विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों से बातचीत की और क्षेत्र में वन संरक्षण उपायों को मजबूत करने, वन्यजीव संरक्षण, वृहद स्तर पर पौधारोपण तथा सतत पर्यावरण प्रबंधन को प्राथमिकता देने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि विभिन्न वन एवं पर्यावरणीय योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए स्थानीय समुदायों और संबंधित पक्षों के साथ समन्वय स्थापित कर कार्य किया जाएगा।

इस अवसर पर निवर्तमान डीएफओ यशोबंत सेठी ने अपने कार्यकाल के अनुभव साझा करते हुए नए अधिकारी को सफल कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि उनके कार्यकाल में वन संसाधनों के संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए विभाग ने सामूहिक रूप से कई महत्वपूर्ण प्रयास किए। उन्होंने विशेष रूप से हाथियों की सुरक्षा के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) तकनीक की स्थापना को विभाग की एक बड़ी उपलब्धि बताया।

दोनों अधिकारियों ने वन संरक्षण और विकास के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा विभाग की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है।

कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों के बीच सौहार्दपूर्ण संवाद देखने को मिला। विभागीय कर्मचारियों ने नए डीएफओ का स्वागत करते हुए उनके नेतृत्व में वन एवं पर्यावरण क्षेत्र में निरंतर प्रगति की उम्मीद जताई।

खरसावां में अवैध खनन एवं पट्टों में जारी अनियमितता पर कार्रवाई

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, जिला खनन पदाधिकारी सरायकेला खरसावां ज्योति शंकर शतपथी द्वारा उगमा एवं राइडीह क्षेत्र में संचालित दो पत्थर खनन पट्टों का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान संबंधित खनन पट्टों में सीमांकन, खनिज भंडारण एवं प्रेषण, पर्यावरणीय स्वीकृति अनुपालन सहित अन्य वैधानिक प्रावधानों की जांच की गई। जांच क्रम में विभिन्न अनियमितताएं पाए जाने पर संबंधित पट्टाधारियों के विरुद्ध विभागीय नियमानुसार नोटिस एवं मांगपत्र निर्गत करने की कार्रवाई की जा रही है। उपायुक्त द्वारा निर्देशित किया गया है कि जिलांतर्गत अवैध खनन, खनिज भंडारण एवं परिवहन की गतिविधियों पर सतत निगरानी रखते हुए नियमानुसार कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। जिला प्रशासन द्वारा अवैध खनन के विरुद्ध अभियान आगे भी निरंतर जारी रहेगा।

चंपाई ने बंगाल चुनाव के बाद अपने गृह जिले में डेमोग्राफिक बदलाव का तीर चलाया

तीस साल पहले कपाली विरान था ...., झारखंड मे भी देखेगा बंगाल चुनाव का परिणाम - चंपाई सोरेन, पूर्व मुख्यमंत्री (जेएमएम)

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड की डेमोग्राफी बदली है। बंगाल की डेमोग्राफी को वहां की जनता ने समझ लिया तथा सत्ता का परिवर्तन कर डाला। डेमोग्राफी के खिलाफ झारखंड में भी बदलाव दिखेगा। बंगाल चुनाव परिणाम का असर झारखंड में भी दिखने लगा है।यह बातें पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने आज यह बातें उसी चांडिल इलाके कहीं। ये वही चंपाई सोरेन है जिन्हेंने 9091मे झारखंड मुक्ति मोर्चा सोरेन गुट की तरफ से पहला चुनाव सरायकेला सीट से लड़ा था। जहां उनकी प्रतिद्वंद्वी उसी झारखंड मुक्ति मोर्चा के मंडल गुट की मोती मार्डी (पूर्व विधायक ,सांसद कृष्ण मार्डी की पत्नी) रही।यह वह समय था जब देश के दसवें मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में टी एन शेसन जैसे कड़क अधिकारी मिले।जिले की राजनीति इतिहास गवाह है कि उस समय आयोग द्वारा लोगों को चुनाव में मताधिकार प्रदान का दरवाजा जोर शोर से खोला गया था। डेमोक्रेटिक शासन, मताधिकार हर हाल में सुलभ उपलब्ध कराने तथा ,कम वोटिंग कर बहुत ही कम रोक टोक होता था। तब कपाली क्षेत्र वास्तव में खाली पड़ा था एवं आयोग के निर्देश वह एक दौर था जब अनेक बाहरी लोगों को उनके कार्यकाल (1990-1996) में आहिस्ता आहिस्ता प्रवेश मिलना आरंभ हुआ देश के अनेक हिस्सों में। कालांतर में एक विशेष समुदाय उस खाली जगह पर आ बसते हैं। इसपर आज पूर्व मुख्यमंत्री ने डेमोग्राफिक बदलाव का जो तीर चलाया है वह बंगाल चुनाव और बदलते परिवेश पर काफी कारगर साबित हो सकता है बशर्ते झारखंड की मौजुदा विपक्ष की राजनीति इसको तवज्जो दे।

खूंटी पुलिस को मिली बड़ी सफलता 426 ग्राम अफीम, पिस्टल -कारतूस बरामद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची खूंटी जिले में पुलिस ने अवैध अफीम और हथियार तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए तीन तस्करों को गिरफ्तार किया है. पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 426 ग्राम अफीम, एक 9 एमएम पिस्टल, दो जिंदा कारतूस, चार मोबाइल फोन और एक मोटरसाइकिल बरामद की है. पूछताछ में आरोपियों ने अवैध अफीम कारोबार से जुड़े होने की बात स्वीकार की है. मामले को संगठित नेटवर्क से जोड़कर देखा जा रहा है और पुलिस इसके पीछे सक्रिय अन्य लोगों की तलाश में जुट गई है.

खूंटी के एसपी ऋषभ गर्ग ने बताया कि 11 मई को पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि चिकोर-हेसाहातु मुख्य मार्ग से तीन युवक मोटरसाइकिल पर अवैध अफीम और हथियार लेकर गुजरने वाले हैं. सूचना मिलते ही अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के नेतृत्व में एक विशेष छापेमारी टीम का गठन किया गया. पुलिस टीम ने चिकोर-हेसाहातु मार्ग पर वाहन जांच अभियान शुरू किया. इसी दौरान डोकाद गांव की ओर से आ रही एक मोटरसाइकिल पर सवार तीन युवक पुलिस को देखकर घबरा गए और बाइक छोड़कर भागने लगे. इस दौरान पुलिस ने तत्काल पीछा कर तीनों को पकड़ लिया.

गिरफ्तार आरोपियों की पहचान धनिश लोहरा उर्फ हनी, योगेंद्र साहू उर्फ जोगी और राजेश कुमार महतो उर्फ कल्लू के रूप में हुई है. पुलिस के अनुसार, इनमें से कुछ आरोपी पहले भी आपराधिक मामलों में जेल जा चुका है. एसपी ऋषभ गर्ग ने बताया कि मामले में एनडीपीएस एक्ट और आर्म्स एक्ट के तहत प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है. साथ ही इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की पहचान और गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी अभियान चलाया जा रहा है. उन्होंने कहा कि जिले में नशा और अवैध हथियार कारोबार के खिलाफ पुलिस का अभियान आगे भी जारी रहेगा

ओडिशा के अलग-अलग पेट्रोल पंपों पर भी तेल की कमी देखी जा रही है

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भूबनेश्वर : मिडिल ईस्ट युद्ध की वजह से इंटरनेशनल मार्केट में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ रही हैं। इस वजह से भारत में भी तेल की कमी देखी जा रही है। ओडिशा के अलग-अलग पेट्रोल पंपों पर भी तेल की कमी देखी जा रही है। इसके लिए ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर विभूति भूषण जेना ने राज्य के लोगों को इलेक्ट्रिक गाड़ियों का इस्तेमाल करने की सलाह दी है। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए मिनिस्टर ने कहा, ज़्यादा से ज़्यादा EV गाड़ियों का इस्तेमाल करें। सरकारी ऑफिसों में इस्तेमाल होने वाली गाड़ियों को EV में बदला जाएगा। मिनिस्टर ने खुद कहा कि ज़रूरत पड़ने पर वह बस से भी सफ़र करेंगे।

इतना ही नहीं, मिनिस्टर ने कहा कि EV गाड़ियां खरीदने के बाद मिलने वाली सब्सिडी का समय 2028 तक बढ़ाया जाएगा। राज्य के अलग-अलग जिलों में पेट्रोल और डीज़ल की कमी देखी जा रही है। तेल की कमी की वजह से कुछ जगहों पर पेट्रोल पंप बंद कर दिए गए हैं। कई पेट्रोल पंपों पर पेट्रोल और डीज़ल की कीमतें घटाकर 200 रुपये प्रति बाइक और 2,000 रुपये प्रति कार कर दी गई हैं। ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर ने इस दौरान EV गाड़ियों के इस्तेमाल की सलाह दी है।

रेलवे बोर्ड ने संबलपुर और रायगढ़ा के रास्ते पुरी-कोरापुट के बीच नई तीन हफ़्ते वाली एक्सप्रेस ट्रेन को मंज़ूरी दी

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: ओडिशा में रेल कनेक्टिविटी की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए, रेल मंत्रालय ने ईस्ट कोस्ट रेलवे के तहत पुरी और कोरापुट के बीच एक नई तीन हफ़्ते वाली एक्सप्रेस ट्रेन को मंज़ूरी दी है। नई ट्रेन (नंबर 18407/18408 पुरी-कोरापुट-पुरी एक्सप्रेस) खोरधा रोड, भुवनेश्वर, नाराज़ मर्थापुर, अंगुल, संबलपुर, टिटिलागढ़ और रायगढ़ा के रास्ते चलेगी। इससे तटीय, पश्चिमी और दक्षिणी ओडिशा के बीच कनेक्टिविटी बढ़ेगी और यात्रियों को ज़्यादा सुविधा मिलेगी। इस ट्रेन के शुरू होने से इस इलाके के लोगों की पुरी, भुवनेश्वर और दक्षिण ओडिशा के आदिवासी बहुल ज़िलों के बीच सीधे रेल कनेक्शन की लंबे समय से चली आ रही इच्छा पूरी हुई है। यह सर्विस तीर्थयात्रा, शिक्षा, हेल्थकेयर, नौकरी, टूरिज़्म और बिज़नेस के मकसद से यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए बहुत मददगार होगी। इस नई ट्रेन से पुरी, खोरधा, कटक, ढेंकनाल, अंगुल, संबलपुर, बरगढ़, बलांगीर, कालाहांडी, रायगढ़ा और कोरापुट जैसे बड़े जिलों के

यात्रियों को फायदा होगा। इससे खास तौर पर KBK इलाके के जिलों के साथ कनेक्टिविटी मजबूत होगी और राज्य के ज़रूरी एजुकेशनल, मेडिकल और एडमिनिस्ट्रेटिव सेंटर्स तक जाने में आसानी होगी। मंज़ूर टाइमटेबलः ट्रेन नंबर 18407 (पुरी-कोरापुट एक्सप्रेस): यह हर सोमवार, गुरुवार और शनिवार को सुबह 07:00 बजे पुरी से निकलेगी और उसी दिन रात 23:30 बजे कोरापुट पहुंचेगी। ट्रेन नंबर 18408 (कोरापुट-पुरी एक्सप्रेस): यह हर मंगलवार, शुक्रवार और रविवार को सुबह 05:00 बजे कोरापुट से निकलेगी और रात 22:20 बजे पुरी पहुंचेगी। स्टॉपओवर स्टेशनः यह ट्रेन खोरधा रोड, भुवनेश्वर, ढेंकनाल, तालचेर रोड, अंगुल, बोइंदा, रेधाखोल, संबलपुर, बरगढ़ रोड, बलांगीर, टिटिलागढ़, केसिंगा, मुनिगुडा, रायगडा, टिकिरी, लक्ष्मीपुर रोड, काकिरीगुमा और दमनयोडी जैसे ज़रूरी स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन में AC, स्लीपर और जनरल सेकंड क्लास मिलाकर कुल 18 कोच होंगे। इस नई रेलवे सर्विस से तटीय ओडिशा और पश्चिमी और दक्षिणी ओडिशा के अंदरूनी जिलों के बीच यात्रा को आसान बनाकर क्षेत्रीय और सामाजिक-आर्थिक विकास में बड़ी भूमिका निभाने की उम्मीद है। यह श्री जगन्नाथ मंदिर आने वाले तीर्थयात्रियों और कोरापुट और रायगडा आने वाले टूरिस्ट को भी इलाके की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने के लिए अच्छी कनेक्टिविटी देगी। इस रेगुलर रेलवे सर्विस के शुरू होने की तारीख अलग से बताई जाएगी।

मातृ दिवस पर लाफ्टर योग और ऑनलाइन प्रतियोगिता आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

आगर मालवा। भारत विकास परिषद शाखा आगर मालवा द्वारा मातृ दिवस के अवसर पर स्वर्गीय उर्मिला अरोड़ा की पुण्य स्मृति में कम्पनी गार्डन में लाफ्टर योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं ने पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी तथा लाफ्टर योग के महत्व को समझते हुए ऐसे आयोजनों को नियमित रूप से आयोजित करने की आवश्यकता बताई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. विवेक मालानी ने की। इस अवसर पर कैलाश माहेश्वरी, संगीता देसाई, शिरोमणि माहेश्वरी, रेखा यादव एवं विमला राजपूत विशेष रूप से उपस्थित रहीं। अतिथियों का स्वागत कल्पना माहेश्वरी, डॉ. निवेदिता शर्मा, सोनू कारपेंटर, इरा शर्मा एवं विद्या मूंदड़ा ने किया। परिषद द्वारा आभा अरोड़ा चोपड़ा का सम्मान पत्र देकर अभिनंदन भी किया गया। संचालन भारती मसानिया ने किया तथा आभार प्रदर्शन रेखा यादव ने व्यक्त किया।

इसी क्रम में "अंतरराष्ट्रीय मातृ दिवस ऑनलाइन प्रतियोगिता" भी आयोजित की गई, जिसमें प्रतिभागियों ने माँ के साथ फोटो एवं भावपूर्ण संदेश प्रस्तुत किए। प्रतियोगिता में विद्या मूंदड़ा प्रथम, मुकेश शर्मा द्वितीय एवं सुधा मेठी तृतीय स्थान पर रहे, जबकि भव्य अटल को विशेष पुरस्कार हेतु चयनित किया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023